ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

भादों-आश्विन, संवत् नानकशाही ५४८
वर्ष १० अंक १ सितंबर 2016

संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ
गुरप्रीत सिंघ भोमा

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये



चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादन विभाग **304**
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

आवण जाणा ना थीऐ निज घरि वासा होइ ॥
सचु खजाना बखसिआ आपे जाणै सोइ ॥१॥
ए मन हरि जीउ चेति तू मनहु तजि विकार ॥
गुर कै सबदि धिआइ तू सचि लगी पिआरु ॥१॥ रहाउ ॥
ऐथै नावहु भुलिआ फिरि हथु किथाऊ न पाइ ॥
जोनी सभि भवाईअनि बिसटा माहि समाइ ॥२॥
वडभागी गुरु पाइआ पूरबि लिखिआ माइ ॥
अनदिनु सची भगति करि सचा लए मिलाइ ॥३॥
आपे स्रिसटि सभ साजीअनु आपे नदरि करेइ ॥
नानक नामि वडिआईआ जै भावै तै देइ ॥४॥ *(पन्ना ९९३)*

मारू राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में श्री गुरु अमरदास जी नाम-सिमरन की महिमा का बखान करते हुए फरमान कर रहे हैं कि नाम-सिमरन की बरकत से मनुष्य का दुनिया में आना-जाना अर्थात् जन्म-मरण का चक्कर समाप्त हो जाता है। मनुष्य का अपने असली घर में टिकाव हो जाता है अर्थात् मनुष्य का ध्यान हर दम प्रभु की हजूरी में लगा रहता है। (जो प्रभु की कृपा का पात्र बनता है उस) मनुष्य को नाम-सिमरन का ख़ज़ाना (बख़्शिश) प्रभु ने खुद बख़्शा है। प्रभु खुद जानते हैं कि कौन-सा मनुष्य इस बख़्शिश, कृपा का हकदार है। ऐ मन! तू हर दम प्रभु को याद करता रह और अपने समस्त विचार, सारी सियानपें त्याग दे। गुरु-शबद का आसरा लेकर प्रभु का नाम-सिमरन किया कर। नाम-सिमरन की बरकत से प्रभु के साथ स्नेह बना रहेगा।

श्री गुरु अमरदास जी फरमान कर रहे हैं कि हे मनुष्य! इस जन्म में यदि तू नाम-सिमरन की कमाई न कर सका तो तुझे यह मौका और कहीं नहीं मिलेगा। कहने से तात्पर्य कि नाम-सिमरन मनुष्य-जन्म में ही संभव है, अन्य किसी जन्म, योनि में यह शुभ काम नहीं हो सकता। तभी तो कहा जाता है कि जन्म-मरण के चक्कर से मुक्ति केवल मनुष्य-जन्म में ही मुमकिन है, इसलिए मनुष्य को इस अवसर का लाभ उठाने में देर नहीं करनी चाहिए। जो मनुष्य नाम-सिमरन नहीं करते वे अन्य योनियों में भटकते रहते हैं, विष्टा, विकारों की गंदगी में पड़े रहते हैं। जिन मनुष्यों के भाग्य में लिखा होता है उन्हें उनके अच्छे भाग्य के कारण गुरु की प्राप्ति होती है। ऐसे मनुष्य हर पल प्रभु-याद में जुड़े रहते हैं और प्रभु उन्हें अपना नैकटय प्रदान करते हैं। सारी सृष्टि प्रभु की रचना है। सारी सृष्टि की संभाल, सब पर कृपा भी प्रभु ही कर रहे हैं। जो मनुष्य प्रभु को प्यारे हैं अर्थात् जो नाम-सिमरन की कमाई कर प्रभु की कृपा का पात्र बने हैं; प्रभु उन्हें लोक-परलोक की सारी बख़्शिशें प्रदान कर निहाल कर देते हैं।



. . . लिखती कुलु तारिआ जीउ ॥

परमात्मा ने धर्म कमाने हेतु धरती धरमसाल (धर्मशाला) की सृजना की। परमात्मा के इस मिशन की पूर्ति के लिए श्री गुरु नानक देव जी पातशाह ने घर-घर में धरमसाल का मिशन प्रारंभ किया और गुरबाणी को इस मिशन का आधार बनाया। गुरबाणी ने मानवीय जीवन का आधार तभी बनना था यदि इसका उच्चारण आम लोगों की बोल-चाल की भाषा में किया जाता। गुरु साहिबान ने आम लोगों की जुबान में गुरबाणी की रचना कर सदियों से आध्यात्मिक पक्ष से बंजर हो चुके मानवीय हृदयों को नाम-अमृत से सरशार किया। गुरु साहिबान रूहानियत के खज़ाने गुरबाणी को सदैवकालीन संभालने हेतु साथ-साथ लिखित रूप भी देते रहे। श्री गुरु अरजन देव जी ने आध्यात्मिक ज्ञान के स्रोत श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना कर मानवता के उद्धार हेतु बड़ा उपकार किया। प्रभु का नाम-सिमरन करने वालों के जीवन पवित्र हो गए, नाम सुनने वाले धन्य हो गए और जिन्होंने प्रभु-यश हाथों से लिखा उनका कुल सहित उद्धार हो गया :

कहते पवित्र सुणते सभि धंनु लिखती कुलु तारिआ जीउ ॥ *(पन्ना ८१)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना से पहले वेदों का ज्ञान संस्कृत भाषा में होने के कारण समाज के एक खास वर्ग तक सीमित होकर रह गया तथा यह जनसमूह के जीवन का आधार न बन पाया, इसलिए वेद-बाणी के ज्ञान की हवा मानवीय हृदयों में से अज्ञानता की दीवार को तोड़ने के समर्थ न हो सकी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना के साथ सारी सृष्टि गा उठी-- *"देखौ भाई ग्हान की आई आंधी ॥ सभै उडानी भ्रम की टाटी रहै न माइआ बांधी ॥"* इस गुरबाणी रूपी ज्ञान की आंधी के कारण सामाजिक स्तर पर वहमों-भ्रमों की दीवार टूट गई तथा आत्मिक स्तर पर मानवीय हृदयों में अहंकार (अज्ञानता) की करारी भीत (दीवार) भी टूट गई। *"धन पिर का इक ही संगि वासा"* का एहसास हुआ। अब प्रभु-प्राप्ति के लिए जंगलों, कंद्राओं में जाने की ज़रूरत न रही। परमात्मा के धरती धरमसाल तथा गुरु जी के घर-घर में धरमसाल का सपना साकार हुआ।

सिक्खों के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब मात्र एक धार्मिक ग्रंथ ही नहीं बल्कि सिक्खों के जागत-जोत गुरु हैं। गुरसिक्ख का श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ पुत्र व पिता वाला रिश्ता है। जिस तरह पारिवारिक मर्यादा में रहकर सांसारिक पिता की खुशी हासिल होती है उसी तरह पंथक मर्यादा में रहकर गुरु-पिता श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बख़्शिश का पात्र बना जाता है।

गुरु साहिबान के हम पर बहुत-से उपकार हैं। गुरबाणी की स्वस्थ जीवन-जाच अपनाकर गुरसिक्खों ने देश-विदेश में, हर क्षेत्र में अपनी मेहनत, लग्न, ईमानदारी तथा काबलियत का लोहा मनवाया है। गुरबाणी सदका जो सम्मान गुरसिक्खों को हासिल हुआ है वो शायद किसी अन्य के पास नहीं। गुरसिक्ख जब गुरबाणी का पाठ करता है तो उसकी रसना में से हू-ब-हू वे शब्द

निकलते हैं जो कभी गुरु साहिबान की रसना में से निकले थे। इस तरह गुरसिक्ख की *"प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥"* वाली अवस्था बन जाती है तथा *"मनु तनु रता रसना रंगि चलूली"* के अनुसार गुरसिक्ख की आत्मा तथा शरीर प्रभु-नाम के रंग में रंग जाते हैं। गुरसिक्ख का जीवन ही रंगमयी हो जाता है।

गुरु साहिबान ने हमारे साथ ऐसी सांझ स्थापित करने के लिए लोक-भाषा पंजाबी में गुरबाणी उच्चारण की, इसलिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा पंजाबी बोली का अटूट सम्बंध है। हमारे लिए पंजाबी बोली सिर्फ एक बोली ही नहीं, यह हमारी गुरु-पिता के साथ बातें करने के लिए जुबान है, यह हमारे गुरु-पिता की बातें सुनने वाले कान हैं। गुरमुखी लिपि हमारी गुरबाणी पढ़ने वाली आंखें हैं।

किंतु आज हमारी नई पीढ़ी पंजाबी भाषा तथा गुरमुखी लिपि से दूर होकर गुरु-पिता श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ बातें करने तथा गुरु की बात सुनने से असमर्थ हो रही है। हमारी नई पीढ़ी की पंजाबी भाषा के प्रति उदासीनता के कारण अपने शबद-गुरु से निरंतर बढ़ रही दूरी हमारे लिए चिंता एवं चिंतन का विषय है। बेशक हमें आज विश्व स्तर पर विचरण करने के लिए दूसरी भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है किंतु अपनी मातृ-भाषा पंजाबी को भूलना अपने गुरु से बेमुख होना है। जैसे-जैसे हम पंजाबी भाषा से दूर होते जाएंगे तैसे-तैसे हमारी गुरबाणी की अमूल्य निधि से समीपता घटती जाएगी।

अत: हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब को पूर्ण रूप से समर्पित होने के लिए जहां उसमें दर्ज बाणी के साथ जुड़ने की आवश्यकता है वहीं यह सब तभी संभव हो सकेगा यदि हम अपनी पंजाबी भाषा के साथ जुड़े रहेंगे।



सोरठि महला ३ ॥
सो सिखु सखा बंधपु है भाई जि गुर के भाणे विचि आवै ॥
आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै ॥
बिनु सतिगुर सुखु कदे न पावै भाई फिरि फिरि पछोतावै ॥१॥
हरि के दास सुहेले भाई ॥
जनम जनम के किलबिख दुख काटे आपे मेलि मिलाई ॥ रहाउ ॥
इहु कुटंबु सभु जीअ के बंधन भाई भरमि भुला सैंसारा ॥
बिनु गुर बंधन टूटहि नाही गुरमुखि मोख दुआरा ॥
करम करहि गुर सबदु न पछाणहि मरि जनमहि वारो वारा ॥२॥
हउ मेरा जगु पलचि रहिआ भाई कोइ न किस ही केरा ॥
गुरमुखि महलु पाइनि गुण गावनि निज घरि होइ बसेरा ॥
ऐथै बूझै सु आपु पछाणै हरि प्रभु है तिसु केरा ॥३॥
सतिगुरू सदा दइआलु है भाई विणु भागा किआ पाईऐ ॥
एक नदरि करि वेखै सभ ऊपरि जेहा भाउ तेहा फलु पाईऐ ॥
नानक नामु वसै मन अंतरि विचहु आपु गवाईऐ ॥४॥६॥ (पन्ना ६०१)

श्री गुरु अमरदास जी : गुरुआई काल से ज्योति-जोत समाने तक का विवरण

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

तीसरे पातशाह श्री गुरु अमरदास जी का जन्म श्री तेजभान जी तथा माता सुलक्खणी जी के गृह में गांव बासरके, ज़िला श्री अमृतसर में हुआ था। आयु में वे श्री गुरु नानक देव जी से १० वर्ष छोटे थे। उन्हें दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगद देव जी तथा गुरु-घर की असीम सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी सेवा से खुश होकर श्री गुरु अंगद देव जी ने उन्हें गुरुआई सौंप दी।

श्री गुरु अमरदास जी को गुरुआई सौंपे जाने का श्री गुरु अंगद देव जी के पुत्रों बाबा दातू एवं बाबा दासू ने विरोध किया। बाबा दासू तो माता खीवी जी द्वारा समझाने पर शांत हो गए मगर बाबा दातू ने अपना रोष व विरोध जारी रखा। एक दिन संगत के समक्ष क्रोध में उसने आसन पर बैठे श्री गुरु अमरदास जी को लात मार दी। शांति के मसीहा तथा नम्रता के पुंज श्री गुरु अमरदास जी ने बाबा दातू के पैर पकड़कर फरमाया, "मेरी हड्डियां सख़्त हैं, आपके पैर कोमल हैं, चोट तो नहीं लगी ?" हालात को मद्देनज़र रखते हुए गुरु जी ने कुछ समय के लिए गोइंदवाल साहिब छोड़ दिया। सिक्खों के प्यार, श्रद्धा व सम्मान के वशीभूत होकर व बाबा बुड्ढा जी की विनती पर गुरु जी वापिस गोइंदवाल साहिब लौट आए। गोइंदवाल साहिब में फिर सतसंग के दरबार सजाने लगे। संगत की आमद फिर से बढ़ने लगी। भजन-कीर्तन के प्रवाह चलने लगे। लंगर शुरू हो गया। दूर-दूर से संगत गुरु जी के दर्शन-दीदार करने हेतु तथा उनके वचन व विचार सुनने हेतु आने लगी। लोग वहां के पक्के निवासी बनने लगे। कहते हैं कि २२ गोत्रों के क्षत्रियों ने यहां अपने घर बना लिए। आबादी में वृद्धि होने लगी और एक अति सुंदर नगरी बस गई।

गुरु जी ने जात-पात, ऊंच-नीच के भेद-भाव खत्म करने हेतु संगत को यह आदेश दिया कि "पहले पंगत, पाछै संगत" अर्थात् संगत (सतसंग) में जाने से पहले पंगत (पंक्ति) में बैठकर लंगर छकना अनिवार्य था, ताकि पंगत में बैठकर मन में समानता का भाव और भी अधिक दृढ़ हो सके।

वहां पर एक कुआं था। गुरु-घर के विरोधियों ने सिक्खों को उस कुएं से पानी लेने से रोक दिया। गुरु जी ने पानी की समस्या तथा झगड़े आदि से निजात दिलाने हेतु एक बाउली (बावली) की खुदाई आरंभ करवाई। लोग इस बाउली से पानी भर ले जाते। यहां से पानी लेने या इस्तेमाल करने में कोई भेद-भाव नहीं किया जाता था। गोइंदवाल साहिब प्रभु-भक्तों के लिए सुहावना, शीतल और शांत स्थान बन गया। बाग-बगीचों की भी सिंचाई होने लगी। बाउली में से पानी लेने के लिए सीढ़ियां बनाई गईं। गुरु-घर के अनन्य सेवक भाई पारो जी की देखरेख में बाउली के निर्माण का काम आरंभ हुआ।

संगत और पंगत के शानदार दर्शन (फ़लसफ़ा) के कारण लोगों में प्रेम व मैत्री-भावना का बहुत प्रचार हुआ। पाखंड, आडंबर, कर्मकांड, दिखावे से रहित नए समाज का निर्माण हो रहा था।

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

गुरु जी ने भलाई व बंदगी पर ज़ोर दिया।

पुरातन पंथी सनातनियों को ये सब बातें अच्छी न लगीं। बाउली का निर्माण होने पर गुरु-घर के प्रति उनकी ईर्ष्या और भी बढ़ गई थी। इसी दौरान गुरु-घर का श्रद्धालु भाई गोइंदा (गोंदा) मरवाहा गुज़र गया। (भाई गोइंदा द्वारा दी गई ज़मीन पर ही गुरु जी ने गोइंदवाल साहिब नगर बसाया था।) गुरु-घर के साथ ईर्ष्या करने वालों ने उसके पुत्र को भड़काकर मोहरा बना लिया और उसके माध्यम से लाहौर के नवाब के पास गुरु जी के विरुद्ध ज़मीन कब्ज़ाने की झूठी शिकायत कर दी। जांच करने पर शिकायत झूठी व गलत पाई गई। फिर गुरु-घर के विरोधियों ने भाई गोइंदा के पुत्र द्वारा दिल्ली में बादशाह अकबर के दरबार में फरियाद करने का दांव खेला। गुरु जी के विरुद्ध लगाए गए सभी आरोप निराधार सिद्ध हुए और विरोधियों को मुंह की खानी पड़ी।

अकबर ने गुरु जी द्वारा किए जा रहे रूहानी व परोपकारी कार्यों की प्रशंसा सुन रखी थी। वह श्री गुरु अमरदास जी के दर्शन के लिए सन् १५६५ में गोइंदवाल साहिब में उनके दरबार में अति नम्रतापूर्वक पहुंचा। पंगत में बैठकर लंगर छका। उपरांत गुरु जी के दर्शन किए। निहाल (तृप्त) हुआ। मन को शांति मिली। अकबर ने गुरु-घर के लंगर के लिए विशेष मदद देनी चाहिए लेकिन गुरु जी ने यह कह कर मना कर दिया कि लंगर तो सब लोगों के मेलजोल से ही चलता है। इससे सब में सेवा की भावना बनी रहती है।

गैर-मुस्लिम लोगों पर मुगल सल्तनत ने कई तरह के लगान, कर आदि लाद रखे थे। श्री गुरु अमरदास जी ने बादशाह अकबर के साथ बातचीत कर जनता को लगान, कर आदि से मुक्त करने के लिए दबाव बनाया। बादशाह अकबर ने गुरु जी की बात मान ली तथा जनता का लगान, कर आदि माफ कर दिया।

सदियों से भारतवर्ष में स्त्री के विधवा होने पर सती होने की कुरीति चली आ रही थी। खुद को धर्मी कहलवाने वाले लोग जिस स्त्री का पति मर जाता था उस स्त्री को मृत पति की चिता में ज़िंदा जलकर सती होने को विवश करते थे। कोई भी इस कुरीति के विरुद्ध बोलने का साहस नहीं करता था। गुरु जी ने सती-प्रथा के खिलाफ़ आवाज़ बुलंद की और ज़ोरदार प्रचार द्वारा इसे बंद करवाया। इससे भी बढ़कर श्री गुरु अमरदास जी ने 'विधवा विवाह' करवाने की रीति चलाई तथा विधवा स्त्रियों को भी जीवित रहने का, सुखी जीवन जीने का अधिकार दिलवाया। गुरु जी का फरमान है :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥१॥
म: ३ ॥ भी सो सतीआ जाणीअनि सील संतोखि रहंन्हि ॥
सेवनि साई आपणा नित उठि संम्हालंन्हि ॥२॥
(पन्ना ७८८)

प्रचार, श्रद्धा, निष्ठा, जज़्बे के कारण सिक्खों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही थी। दूर-दूर तक सिक्ख धर्म को मानने वाले लोग काफी गिनती में हो गए थे। ज़रूरत महसूस हुई कि उन्हें सदैव सिक्खी के संग जोड़कर रखा जाए। अकबर की हकूमत प्रांतों में बंटी हुई थी। श्री गुरु अमरदास जी ने संबंधित क्षेत्रों में से एक गुणवान व योग्य सिक्ख को चुनकर २२ मंजियों (प्रचार-केंद्र) की स्थापना की। प्रत्येक 'मंजी' के संचालक सिक्ख का कर्त्तव्य था कि वह सिक्ख धर्म के सिद्धांतों व आदर्शों का प्रचार करे और सभी को प्रमुख केंद्र (गुरु-घर) के साथ

जोड़कर रखे। २२ मंजियों के अलावा गुरु जी ने ५२ पीढ़ों (उप-प्रचार केंद्र) की भी स्थापना की। इन मंजियों व पीढ़ों की बदौलत सिक्खी का काफी प्रचार एवं प्रसार हुआ।

गुरु जी ने पर्दा करने (घूंघट निकालने) वाले रिवाज़ की भी कड़े शब्दों में आलोचना की। उन्होंने आदेश दिया कि कोई भी गुरु के दरबार में पर्दा करके न आए। पर्दा-प्रथा के विरुद्ध गुरु जी ने तर्क देते हुए फरमाया कि यह गुलामी की निशानी है। इसका आदर या सम्मान करने या करवाने के साथ कोई सम्बंध नहीं है।

तीसरे पातशाह की आज्ञानुसार ही चौथे पातशाह श्री गुरु रामदास जी ने श्री अमृतसर शहर की नींव रखी थी। आदेश दिया कि जहां पर जगह नीची है, वहां पर सरोवर की खुदाई की जाए। सिक्खी का दूर-दूर तक प्रचार हो चुका था। उन्होंने भाई पारो जी को हुक्म दिया कि साल भर में एक दिन ऐसा निश्चित किया जाए, जब सभी सिक्ख एक जगह इकट्‌ठा होकर विचार-चर्चा करें, प्रेरणा व उत्साह प्राप्त करें। इसके लिए वैसाखी का दिन चुना गया। उनकी यह भी एक बड़ी देन थी, जिससे कौम में प्रत्येक वर्ष एक स्थान पर इकट्‌ठा होने का चाव पैदा हुआ। कालांतर में वैसाखी वाले दिवस पर ही खालसा पंथ की साजना हुई।

श्री गुरु अमरदास जी ने १७ रागों में बाणी उच्चारण की है। गुरु जी ने कई बड़ी बाणियों का भी उच्चारण किया, जिनमें रामकली राग में 'अनंदु' तथा आसा राग में 'पटी' प्रसिद्ध हैं। श्री गुरु अमरदास जी, श्री गुरु रामदास जी की निष्ठा, सेवा, लग्न, हुक्म मानने की योग्यता व नम्रता देख उन्हें गुरुआई सौंपकर १ आश्विन, संवत् १६३१ को परम ज्योति में विलीन हो गए। ☸

कविता

रज़ा तेरी में रहे राज़ी

सदा ही यह तेरे दर का, जो बन जाये तो बिहतर है।
रज़ा तेरी में रहे राज़ी, यह गुन गाये तो बिहतर है।
मुरादों की तमन्ना है, कबूले मौत यह मन की,
चले न अपनी मर्ज़ी जो, प्रभु भाये तो बिहतर है।
गिला, शिकवा नहीं बनता, मुकद्दर में मिला वो ही,
मिला है जो उसी पर ही, सब्र आये तो बिहतर है।
हकीकत क्या है बंदे की? क्या जीवन का मकसद है?
इस रहस्य को यह, समझ पाये तो बिहतर है।
मनाये खैर यह सब की, किसी दिल को दुखाये न,
बेगाने को समझ अपना, गले लगाए तो बिहतर है।
करे हक-सच की बातें, मुशक्कत का धनी बनकर,
किसी के हक पे न करे दावा, खाये करके तो बिहतर है।
तेरे बस हुक्म में गुज़रे, देना तौफीक ऐ मालिक!
तेरी रहमत में गुण 'कोमल', सदा गाये तो बिहतर है।

-स. सतिनाम सिंघ कोमल, २४८, अर्बन अस्टेट, लुधियाना-१४१०१०, फोन : ९८७२६-०९९२१

श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में गुरु-महिमा

*-प्रो लाल मोहर उपाध्याय**

भारतीय समाज में गुरु का स्थान बड़ा उच्च एवं गौरवपूर्ण रहा है। सही बात तो यह है कि गुरु ही धर्म और समाज का नियामक रहा है। उपनिषदों में भी गुरु की महत्ता पूर्ण रूप से प्राप्त होती है। ज्ञान-प्राप्ति गुरु द्वारा ही होती है। मध्य युग के भक्ति साहित्य में गुरु का स्थान बहुत ऊंचा है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु का स्थान सर्वोपरि है। गुरु की महत्ता पर श्री गुरु नानक देव जी तथा उनके पश्चात अन्य गुरु साहिबान द्वारा भी काफी बल दिया गया है। गुरबाणी के अनुसार षठि् दर्शन, योगी, सन्यासी आदि बिना गुरु के भ्रमित ही रहते हैं :

खटु दरसन जोगी संनिआसी बिनु गुर भरमि भुलाए ॥ (पन्ना ६७)

बिना गुरु के मोह रूपी अंधकार का प्राबल्य रहता है, जिससे बार-बार संसार-सागर में डूबना पड़ता है अर्थात् जन्म-मरण का चक्कर बना रहता है :

बाझु गुरू है मोहु गुबारा ॥
फिरि फिरि डुबै वारो वारा ॥ (पन्ना १०६८)

सतिगुरु से जो विमुख होते हैं, वे परम अभागे होते हैं। वे निरंतर दुख कमाते हैं और अनेक चिंताओं में जलते रहते हैं :

सतगुर ते जो मुह फेरहि मथे तिन काले ॥
अनदिनु दुख कमावदे नित जोहे जम जाले ॥
सुपनै सुखु न देखनी बहु चिंता परजाले ॥
(पन्ना ३०)

इतना ही नहीं, जो लोग सतिगुरु से मुंह फेरते हैं और उनसे विमुख रहते हैं, उनकी बुरी दशा होती है :

सतिगुरु ते जो मुंह फेरे ते बेमुख बुरे दिसंनि ॥
अनिदिनु बधे मारीअनि फिरि वेला न लहंनि ॥
(पन्ना २३३)

जो व्यक्ति सतिगुरु से मुंह फेरे हुए हैं उन्हें कोई स्थिर ठिकाना नहीं मिलता। कहने से तात्पर्य कि सच्चे गुरु का दर ही मनुष्य का असल मार्गदर्शन करता है, शेष दर केवल भटकना में ही डालते हैं :

जो सतिगुर ते मुह फिरे तिना ठउर न ठाउ ॥
(पन्ना ६४५)

बिना गुरु के लोग अज्ञानता के घनघोर अंधकार में अज्ञानी और अंधों के समान हैं। उनकी दशा विष्टा के कीट के समान है। जिस प्रकार विष्टा का कीट विष्टा से उत्पन्न होता है और विष्टा में ही मर जाता है, उसी भांति बिना गुरु के लोग विषयों में रहते हैं और विषयों में ही मर-खप जाते हैं :

विसटा के कीड़े पवहि विचि विसटा से विसटा माहि समाइ ॥ (पन्ना २८)

गुरु की बढ़ती महत्ता देखकर अनेक विषयी-भोगी सांसारिक मनुष्य भी गुरु बनने का ढोंग करने लगे हैं। ऐसे लोगों को पाखंडी कहा जाता है। इस तरह के लोगों के बारे में श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है कि अंधे (अधूरे) गुरु से भ्रम निवारण नहीं हो सकता, क्योंकि वह मूल (परमात्मा) को त्यागकर द्वैत भाव में ही

**गुरबाणी प्रचार सेवा केंद्र, अशोक चक्र गली, गुरहट्टा, पटना साहिब-८००००८; फोन : ९३०४८९५६४७*

लिप्त रहता है। वह विषय रूपी विष में मतवाला है और अंत में विष में ही समा जाता है :

अंधे गुरू ते भरमु न जाई ॥
मूलु छोडि लागे दूजै भाई ॥
बिखु का माता बिखु माहि समाई ॥ (पन्ना २३२)

गुरु साहिबान ने स्थान-स्थान पर इस बात का संकेत किया है कि परमात्मा की आलौकिक कृपा से ही सतिगुरु की प्राप्ति होती है। श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है :

--पूरै भागि सतिगुरु पाईऐ जे हरि प्रभु बखस करेइ ॥ (पन्ना ८५१)
--नदरि करे ता गुरू मिलाए ॥ (पन्ना १०५४)

गुरु-प्राप्ति के लिए अपने अहं-भाव को नष्ट कर देना परमावश्यक है। जो अपने अहं को गंवा देता है, उसी को सतिगुरु की प्राप्ति होती है :

नानक सतिगुरु तद ही पाए जां विचहु आपु गवाए ॥ (पन्ना ५५०)

सच्चाई तो यह है कि सतिगुरु के प्राप्त होने पर वही साधक उससे पूरा-पूरा लाभ उठा सकता है, जो उसमें पूर्ण श्रद्धा, विश्वास और भक्ति रखता है। जैसा भाव होता है, वैसी ही सिद्धि होती है। सतिगुरु को परमात्मा का साक्षात रूप समझना चाहिए। श्री गुरु अमरदास जी ने फरमान किया है कि हम जिस प्रकार का सतिगुरु में भाव रखते हैं, उसी प्रकार का हमें सुख प्राप्त होता है :

जेहा सतगुरु करि जाणिआ तेहो जेहा सुखु होइ ॥ (पन्ना ३०)

जिन्होंने अपने गुरु को भुला दिया है, वे अत्यंत बुरे हैं। उनको देखना वर्जित है, क्योंकि वे पापी और हत्यारे हैं :

जिना गुरु गोपिआ आपणा ते नर बुरिआरी ॥
हरि जीउ तिन का दरसनु ना करहु पापिसट हतिआरी ॥ (पन्ना ६५१)

सतिगुरु के प्रति मनुष्य का हृदय पूर्ण निष्कपट होना चाहिए। श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है कि गुरु का शबद जो नहीं जानते वे अंधे और बावले हैं। ऐसे लोगों का संसार में आना सफल नहीं है। ऐसे लोग परमात्मा की महिमा को नहीं जानते और अपना अमूल्य मानव जीवन व्यर्थ ही नष्ट करके बार-बार जन्म धारण करते हैं :

सबदु न जाणहि से अंने बोले से कितु आए संसारा ॥ . . .
बिसटा के कीड़े बिसटा माहि समाणे मनमुख मुगध गुबारा ॥ (पन्ना ६०१)

श्री गुरु अमरदास जी ने तो यहां तक कहा है कि अनेक प्रकार के शारीरिक तपों से अहंकार की निवृत्ति नहीं होती; अनेक भांति के आध्यात्मिक कर्म करने से भी परमात्मा के पवित्र नाम की प्राप्ति नहीं होती, जब तक मन में अहंकार प्रबल रहता है :

कांइआ साधै उरध तपु करै विचहु हउमै न जाइ ॥ . . .
गुर कै सबदि जीवतु मरै हरि नामु वसै मनि आइ ॥ (पन्ना ३३)

जो गुरु के शबद (गुरबाणी) पर विचार करते हैं, उन्हें परमात्मा का भय प्राप्त होता है, सतसंगत मिलती है और परमात्मा का गुणगान करने की बुद्धि प्राप्त होती है। इससे परमात्मा हृदय में आ बसता है और दुविधा की मैल कट जाती है। परमात्मा से प्रेम हो जाता है :

आपणा भउ तिन पाइओनु जिन गुर का सबदु बीचारि ॥ . . .
सची बाणी सचु मनि सचे नालि पिआरु ॥ (पन्ना ३५)

जहां तक सेवा-भावना का प्रश्न है,

सतिगुरु की सेवा करना सचमुच बड़ा कठिन कार्य है। यदि सिर देने से, अपने को नष्ट करने से भी गुरु-सेवा का शुभ अवसर प्राप्त हो, तो उसे करने से नहीं चूकना चाहिए :

सतगुर की सेवा गाखड़ी सिरु दीजै आपु गवाइ ॥ (पन्ना २७)

श्री गुरु अमरदास जी का कहना है कि सतिगुरु की प्राप्ति से ऋद्धियां-सिद्धियां चेरी हो जाती हैं। इनकी प्राप्ति सांसारिक ऐश्वर्य-प्राप्ति की चरम सीमा है :

सतिगुर मिलिऐ उलटी भई नव निधि खरचिउ खाउ ॥
अठारह सिधी पिछै लगीआ फिरनि निज घरि वसै निज थाइ ॥ (पन्ना ९१)

हमें ऐसे ही सतिगुरु का आसरा लेना चाहिए जिसके साथ रहने से जन्म-मरण का चक्कर थम जाता है; मुक्त अवस्था प्राप्त हो जाती है :

--ए मन ऐसा सतिगुरु खोजि लहु जितु सेविऐ जनम मरण दुखु जाइ ॥ (पन्ना ५९१)
--सतिगुर मिलिऐ धावतु थंम्हिआ निज घरि वसिआ आए ॥ . . .
तह अनेक वाजे सदा अनदु है सचे रहिआ समाए ॥ (पन्ना ४४०)

सच्चे गुरु की सेवा से ही परमात्मा का भय, वैराग्य, भक्ति, प्रेम आदि प्राप्त होते हैं :

गुर सेवा नाउ पाईऐ सचे रहै समाइ ॥
सबदि मंनिऐ गुरु पाईऐ विचहु आपु गवाइ ॥
अनदिनु भगति करे सदा साचे की लिव लाइ ॥
नामु पदारथु मनि वसिआ नानक सहजि समाइ ॥ (पन्ना ३३)

सिक्ख पंथ के तीसरे गुरु श्री गुरु अमरदास जी की बाणी में सतिगुरु की महिमा का बखान बहुतायत में हुआ है। गुरबाणी में अटूट आस्था रखते हुए गुरु-उपदेश अनुसार चलना ही हर मानव का धर्म है।

कविता

चरण-धूल चाहूं

चरण-धूल चाहूं
गुरु-संगत की
गुरु-पंगत की
गुरु-सत्कार की।
चरण-धूल चाहूं
गुरु-घर आने की
पावन प्रयत्न की
सत्संगत सुजान
नत्मस्तनहार की।
चरण-धूल चाहूं
इस साच संबोध की
पावन पुनीत शबद
गुरुदेव संग मन के
गहरे अभेदी
परम प्यार की।
चरण-धूल चाहूं
गुरु-घर के लासानी
गुरुदेव के अभिन्न
असंख्य, अनगिनत सेवकों
श्रद्धा बेशुमार की।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, फोन : ९४१७१-७५८४६

ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी

-डॉ. जगजीत कौर*

बाबा बुड्ढा जी सिक्ख धर्म-इतिहास की महान सम्मानित शख़्सियत, अद्वितीय दिव्य ज्ञान से संपन्न ब्रह्मज्ञानी, अनूठी सूझबूझ व विवेक बुद्धि से सम्पन्न व्यवहारिकता के साथ-साथ असीम निर्भीक, साहसी, वीर-भावना के पोषक, विविध गुणों का मुजस्समा थे। बाबा बुड्ढा जी ऐसी अद्वितीय शख़्सियत थे, जिन्हें छः गुरु साहिबान के निकट रहकर सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और इन सभी महान गुरुदेव जी से भरपूर सम्मान और प्यार प्राप्त हुआ। सभी गुरु साहिबान उन्हें अपने बहुत निकट रखते रहे। उनके गुणों और उनकी विद्वता का सम्मान करते हुए प्रत्येक महत्त्वपूर्ण विषय पर उनकी राय लेते रहे और उनके बताए सुझावों के अनुसार कार्य करते रहे। सिक्ख संगत और समय-समय की सूझ-बूझवान प्रमुख गुरमुख सिक्ख शख़्सियतें भी बाबा जी का बराबर सम्मान करती रहीं और उनके मशविरे व निर्देश को सदैव प्राथमिकता देती रहीं। निश्चय ही बाबा बुड्ढा जी सिक्ख धर्म-इतिहास के जगमगाते माणिक्य हैं।

सेवा-भावना के पुंज बाबा बुड्ढा जी का जन्म ७ कार्तिक, संवत् १५६३ को माता गौरां जी की कोख से पिता भाई सुग्घा (रंधावा) जी के गृह गांव कत्थूनंगल, ज़िला श्री अमृतसर में हुआ। बाबा जी का नाम 'बूड़ा' रखा गया। बाल्य अवस्था से ही बाबा जी अत्यंत मेधावी प्रतिभा थे। पिता के घर सभी प्रकार के राजसी सुख प्राप्त थे। भाई सुग्घा जी के भारी खेत-खलिहान थे। बाबा जी इन खेतों में अक्सर भैंसें चराया करते थे।

सन् १५२४ ई में जब श्री गुरु नानक साहिब लंबी यात्राओं के बाद करतारपुर की ओर लौट रहे थे तो रावी नदी के पश्चिमी तट पर फैले विशाल खेतों में उन्होंने एक बालक को भैंसें चराते हुए देखा। बालक की दृष्टि गुरु साहिब पर पड़ी तो वह भागकर गुरु साहिब के निकट आया। चरण स्पर्श कर बाबा जी श्री गुरु नानक देव जी से विनम्र भाव से बोले, "धन्य भाग्य, आप हमारे खेतों में आए! मुझे बताएं मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?" गुरुदेव बालक की विनम्रता व सौम्यता से प्रभावित हो मुस्कराने लगे। बाबा बुड्ढा जी दूध का एक भरा पात्र श्रद्धा सहित लेकर गुरु जी की सेवा में पहुंचे। गुरु जी ने दूध छका और बाबा जी के जीवन के बारे में जानने लगे। गुरु जी के पूछने पर बाबा जी ने अपना नाम बताया। बाबा जी अति गंभीरता से बोले, "गुरु जी! मुझे कुछ ऐसा बताओ जिसमें मैं विकार-मुक्त हो परम-आनंद की स्थिति को प्राप्त कर सकूं।" बालक के मुख से ऐसे गंभीर तत्व शब्द सुन गुरु साहिब ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम हो तो बालक, पर बातें परिपक्व बुद्धिमानों, बुड्ढों (बुजुर्ग, सियाना) जैसी करते हो। तुम्हारा नाम 'बूड़ा' नहीं 'बुड्ढा' होना चाहिए।" दस वर्ष के बाबा जी तब से ही गुरुदेव की सेवा में टिक गये और

*१८०१-सी, मिशन कम्पाऊण्ड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (यू. पी.)-२४७००१, मो. ९४१२४-८०२६६

बाबा बुड्ढा जी के नाम से प्रसिद्ध हुए। बाबा बुड्ढा जी श्री गुरु नानक साहिब के पास करतारपुर ही रहे और उनके अनन्य सेवकों में शामिल हुए। अपनी कुशाग्र बुद्धि से गुरु जी के निकट रहकर उन्होंने विभिन्न ज्ञान-विज्ञान, धर्म-शास्त्र, दर्शन-शास्त्र आदि का ज्ञान प्राप्त किया। गुरुदेव द्वारा उच्चरित गुरबाणी का वे केवल अध्ययन ही नहीं करते, अन्य सिक्ख श्रद्धालुओं को उसकी विशद व्याख्या करके भी बताते। गुरुदेव जी की समूची बाणी को पोथी रूप में वे संभालकर रखते। श्रद्धावश वे गुरु जी के इतने निकट रहे कि गुरुदेव जी उनका मार्गदर्शन भी करते और उनकी सूझबूझ, विवेक बुद्धि से प्रभावित हो समय-समय पर गंभीर मसलों पर उनकी सलाह भी लेते। गुरु जी के जीवन के अंतिम क्षणों में भी बाबा जी उनके निकट ही रहे और भाई लहिणा जी को श्री गुरु अंगद देव जी के रूप में गुरुआई प्रदान करने की सारी रस्में पूरी कीं। आगे चलकर यह परंपरा बन गई। छठम् गुरु साहिब तक गुरुआई पर सुशोभित करने की सारी रस्में बाबा जी पूरी करते रहे।

बाबा बुड्ढा जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन सिक्ख पंथ, गुरबाणी और गुरमति सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में व्यतीत किया। जब-जब सिक्ख संप्रदाय में कोई मसला खड़ा होता बाबा जी की राय से सुलझाया जाता। बाबा जी के कहे वचन सभी को मान्य होते।

१५३९ ई में श्री गुरु अंगद देव जी श्री गुरु नानक देव जी के हुक्म अनुसार करतारपुर छोड़कर खडूर साहिब आ गए। खडूर साहिब निवास करते समय गुरबाणी के प्रचार के उद्देश्य से गुरु जी ने गुरमुखी लिपि बना गुरबाणी के गुटके तैयार किए। इस नवोदित लिपि और पंजाबी भाषा व गुरमति के प्रचार-प्रसार की सेवा भी बाबा बुड्ढा जी को ही सौंपी गई। बाबा जी ने पाठशालाएं लगाकर गुरमुखी लिपि से जनमानस को परिचित कराया और बाणी का प्रचार किया।

श्री गुरु अंगद देव जी ने १५५२ ई में ज्योति-जोत समाने से पूर्व बाबा बुड्ढा जी द्वारा श्री गुरु अमरदास जी को गुरुआई पर सुशोभित करवा तीसरे गुरु के रूप में घोषित किया। श्री गुरु अंगद देव जी के सुपुत्र बाबा दातू और बाबा दासू ने विरोध किया। बाबा दातू ने तो गुरु साहिब का अनादर भी किया। बाबा बुड्ढा जी ने स्थिति को संभालने हुए संगत में श्री गुरु अमरदास जी की प्रतिष्ठा को बनाए रखा। बाबा जी निरंतर श्री गुरु अमरदास जी की सेवा में रहे। श्री गुरु अमरदास जी बाबा दातू के विरोध को देखते हुए गांव बासरके आ गए और अज्ञातवास कर लिया। तब बाबा जी ने गुप्त स्थान का पता लगा उसकी पिछली दीवार को संन (सेंध) लगाकर प्रवेश कर गुरु जी के दर्शन संगत को कराए। यहां आजकल गुरुद्वारा संन साहिब सुशोभित है। तत्पश्चात श्री गुरु अमरदास जी गोइंदवाल साहिब आ गए। यहां बाउली साहिब की सेवा करवाई। इस सेवा में भी बाबा बुड्ढा जी ने भरपूर योगदान दिया। गोइंदवाल साहिब सिक्खी का प्रमुख प्रचार केंद्र बना।

गुरमति के प्रचार-प्रसार के लिए श्री गुरु अमरदास जी ने २२ मंजियां स्थापित कीं। मंजी-प्रथा के भी मुख्य प्रबंधक बाबा बुड्ढा जी ही रहे। गुरु-यश सुन अकबर बादशाह गोइंदवाल साहिब गुरु-दर्शन को आया तो बाबा जी ने उसे सिक्ख पंथ के सिद्धांतों के बारे में समझाया जिसे जानकर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पंगत

में बैठकर प्रसाद (लंगर) छका। भेदभाव से हीन मानव-सेवा से वह अति प्रभावित हुआ।

श्री गुरु अमरदास जी ने सन् १५७४ ई में ज्योति-जोत समाने से पूर्व भाई जेठा जी को श्री गुरु रामदास जी के रूप में बाबा बुड्ढा जी से सारी रस्में पूरी करवा गुरुआई पद पर प्रतिष्ठित किया। श्री गुरु रामदास जी को श्री अमृतसर नगर बसाने और सरोवरों की खुदाई करने का आदेश श्री गुरु अमरदास जी से ही प्राप्त हुआ। गुरु जी श्री अमृतसर आ गए। बाबा बुड्ढा जी भी साथ आए। पहले संतोखसर वाले सरोवर फिर अमृत सरोवर (श्री हरिमंदर साहिब वाला सरोवर) की खुदाई में तथा श्री अमृतसर नगर बसाने में तन-मन से सेवा की। संतोखसर (सरोवर) की खुदाई का टक्क श्री गुरु रामदास जी ने संवत् १६२७ में लगाया। संवत् १६३४ में अमृत सरोवर की खुदाई शुरू हुई थी। इसका टक्क दुख भंजनी बेरीं के निकट लगाया गया। अमृत सरोवर की खुदाई की देख-रेख बाबा बुड्ढा जी एक बेरी (बिर) के वृक्ष के नीचे बैठकर करते थे। इस बेरी को अब बाबा बुड्ढा जी की बेर कहा जाता है।

श्री गुरु रामदास जी के तीन सुपुत्र थे। इन तीनों के आचार-व्यवहार की परख बाबा जी करते रहते थे। जब पंचम गुरुदेव श्री गुरु अरजन देव जी को गुरुआई प्रदान करने का निर्णय लेना था तो श्री गुरु रामदास जी ने बाबा बुड्ढा जी की सलाह ली और अपने छोटे सुपुत्र का इस दिव्य पद के लिए चयन किया।

जब श्री गुरु अरजन देव जी गुरु-पद पर प्रतिष्ठित हुए तो उनका बड़ा भाई प्रिथी चंद गुरुआई न मिलने के कारण गुरु जी की राह में रोड़े अटकाने लगा। बाबा बुड्ढा जी ने गुरु साहिब को पूरा सहयोग देते हुए संगत को गुरु-घर से जोड़े रखा। योजनाबद्ध तरीके से भेटा आती रही। श्री गुरु अरजन देव जी पूरी चेतना से रचनात्मक कार्यों में व्यस्त रहे। श्री हरिमंदर साहिब का निर्माण किया गया। सरोवर के ठीक बीचो-बीच भव्य दैवी श्री हरिमंदर साहिब के निर्माण-कार्य की सेवा में भी बाबा बुड्ढा जी का भरपूर सहयोग रहा।

श्री गुरु अरजन देव जी ने समग्र मानवता पर आलौकिक उपकार करते हुए कुल मानवता के आध्यात्मिक कल्याण के लिए बाणी का विशाल बोहिथ श्री गुरु ग्रंथ साहिब तैयार करवाया। बाबा बुड्ढा जी को श्री गुरु नानक पातशाह के समय से बाणी का अथाह ज्ञान, सूझ-बूझ और तत्व ज्ञान था। उसे दृष्टि में रखते हुए श्री गुरु अरजन देव जी ने बाबा जी को ही इस विशाल बोहिथ की संभाल के लिए नियुक्त किया। जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब का प्रकाश श्री हरिमंदर साहिब में किया गया तो पहला हुकमनामा बाबा जी ने ही लिया। गुरु साहिब ने बाबा जी को पहले ग्रंथी के रूप में प्रतिष्ठित किया। श्री गुरु अरजन देव जी भी बाबा जी को पूर्ण सम्मान, श्रद्धा, प्रेम एवं आदर देते थे। श्री गुरु अरजन देव जी के घर श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब का जन्म हुआ। गुरु जी ने छठम् पातशाह के रूप में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गुरुआई प्रदान कर बाबा बुड्ढा जी को उनके संग रहने को कहा।

बाबा बुड्ढा जी के अंतरमन में एक कसक थी। बाबा जी के पूर्वज़ २०-२५ गांवों के मालिक थे। भारी ज़मींदार थे। समय-समय पर मुगलों के हमलों ने इनके खेत-खलिहानों को बर्बाद किया और गांवों में लूटपाट मचाई। बाबा जी के परिवार को कत्थूनंगल छोड़कर रमदास गांव आना पड़ा। बचपन से ही बाबा

जी के मन में यह भावना थी कि कोई ऐसा योद्धा हो जो आततायिओं को मुंहतोड़ जवाब दे। दूसरी तरफ श्री गुरु अरजन देव जी ने लाहौर में शहीदी पाने से पूर्व बाबा जी को यह कहलवा भेजा कि श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को गुरुआई के पद पर आसीन करें तथा इन्हें शस्त्र धारण करवाए जाएं। बाबा जी ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को जहां इतिहास, भूगोल, दर्शन-शास्त्र, भाषा-शास्त्र एवं गुरबाणी का अध्ययन करवाया वहीं उन्हें शस्त्र-विद्या में भी निपुण किया। उन्हें घुड़सवारी, नेजाबाज़ी, तेग-संचालन आदि में कुशल किया। बाबा बुड्ढा जी ने श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब को पीरी के साथ मीरी की कृपाण भी धारण करवाई। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब की घोषणा के अनुसार जब अस्त्र-शस्त्र, घोड़े और जवानियां गुरु-घर को अर्पण करने का आदेश हुआ तो बाबा जी ने इस योजना की सफलता में पूरा सहयोग दिया। श्री अकाल तख़्त साहिब के निर्माण में भी बाबा जी की ही लग्न फलीभूत हुई। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब बाबा जी का पूर्ण सम्मान करते थे। जब गुरु जी को ग्वालियर के किले में कैद कर लिया गया तो बाबा बुड्ढा जी ने गुरु जी की याद ताज़ा रखने के लिए श्री हरिमंदर साहिब में चौंकी की मर्यादा चलाई जो अब भी चल रही है। माता गंगा जी के हुक्म पर बाबा जी मुखी सिंघों को साथ ले ग्वालियर पहुंचे, परंतु उन्हें गुरु जी से मिलने नहीं दिया गया। वे संगत सहित किले की परिक्रमा व शबद-गायन करते हुए लौट आए। ऐसा कई बार हुआ। अंत में जहांगीर से मिलकर गुरु साहिब की रिहाई के आदेश जारी करवाए। गुरु जी ५२ पहाड़ी राजाओं को भी साथ ले किले से बाहर आए। जब श्री अमृतसर पहुंचे तो बाबा बुड्ढा जी ने श्री हरिमंदर साहिब परिसर में दीपमाला करवाई, खुशी मनाई, जो आज भी 'बंदी छोड़ दिवस' के रूप में उस याद को ताजा करवाती है।

ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा जी विद्वता के अथाह सागर थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के साहिबज़ादों को शिक्षा देने का अवसर आया तब भी बाबा जी ही उनके शिक्षक बने। अब तक बाबा जी बहुत वृद्ध हो चुके थे। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब से आज्ञा ले वे रमदास आ गए। बाबा जी के अंत समय में श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब रमदास गए। बाबा जी ने गुरु-चरण स्पर्श किए और गुरु-गोद में ही अचल विश्राम किया। बाबा जी १२५ वर्ष की आयु भोग परलोक गमन कर गए। गुरु साहिब ने अपने हाथ से चिता तैयार की। गुरुदेव जी ने स्वयं बाबा जी की मृत देह का दाह संस्कार किया।

बाबा बुड्ढा जी के चार सुपुत्र थे। उन्होंने चारों सुपुत्रों को गुरु-घर से जोड़े रखा। श्री गुरु हरिराय साहिब और श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब को गुरुआई पद पर विराजमान करते समय भाई भाना जी ने मर्यादा पूरी करवाई। भाई गुरदित्ता जी ने श्री गुरु तेग बहादर साहिब को तथा भाई राम कुंवर जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को गुरुआई पद पर आसीन करते समय रस्में पूरी कीं। बाद में भाई राम कुंवर जी अमृत-पान कर भाई गुरबख़्श सिंघ बने और गुरु-घर की सेवा करते रहे। कवि सोंध ने १७९२ में 'बंसावली बाबा बुड्ढा जी की' ग्रंथ की रचना की, जिसमें ११ वंशज़ों का ज़िक्र है जो निरंतर गुरु-घर के साथ जुड़े रहे।



श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सृष्टि-रचना संबंधी अंतर्दृष्टि

*-डॉ. सत्येंद्र पाल सिंघ**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब को संपूर्ण ज्ञान के सागर का सम्मान व स्थान प्राप्त है जो मनुष्य की सारी जिज्ञासाओं को शांत करने और उसके सारे प्रश्नों का समाधान करने में समर्थ है। मनुष्य की सोच जहां तक जा सकती है गुरबाणी उससे कहीं आगे होकर उसे भ्रम और संशयों से मुक्त करती है और ज्ञान की उस रोशनी से रूबरू कराती है जो उसे संसार के सच को पहचानने में सहायक होती है। गुरबाणी में मिलते उपदेशों को जाने बिना वह न तो स्वयं के बारे में जान सकता है और न ही अपने जीवन की दिशा तय कर सकता है। मनुष्य ने जब से आंखें खोली हैं, उसे सबसे अधिक विस्मित संसार की रचना ने किया है जो इतने रहस्यों और कौतुकों से भरी हुई है कि पारावार ही नज़र नहीं आता। वह अनेकानेक अनुसंधानों के बाद एक रहस्य जान पाता है तो कितने ही नये रहस्य आगे आकर उसके ज्ञान को अनिश्चित, अपूर्ण और अपर्याप्त ठहराने लगते हैं। आज तक हाथ-पैर मार रहे वैज्ञानिक और अनुसंधानकर्त्ता यह अवश्य महसूस करते हैं कि सृष्टि की यह अनंत और बहुरंगी रचना अनायास नहीं, इसके पीछे कोई शक्ति है, किंतु अभी तक वे कोई सिरा नहीं पकड़ पाये हैं और भिन्न-भिन्न मतों के चलते आपस में ही वाद-विवाद में उलझे हुए हैं। श्री गुरु नानक साहिब ने पंद्रहवीं शताब्दी में ही कह दिया था कि इस तरह सोचते-विचारते रहने का कोई लाभ नहीं-- *"सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥"* उस समय भी गुरु साहिब ने देखा कि बहुत-से लोग हैं जो अपने ज्ञान के अहंकार में रत हैं और सृष्टि के तत्व को पाने का यत्न कर रहे हैं। बहुत-से चतुर लोग भी अपने-अपने निष्कर्ष निकालने में लगे हुए हैं-- *"सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥"* गुरु साहिब ने कहा कि किसी चतुराई से भी सच को नहीं जाना जा सकता। उन्होंने कहा कि जो कुछ संसार में दिख रहा है, जन्म ले रहा है और नष्ट हो रहा है, सब कुछ एक विधान के अंतर्गत हो रहा है-- *"हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ . . . हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥"* गुरु साहिब ने कहा कि एक परम सत्ता है जो सारी सृष्टि का संचालन कर रही है। उसकी क्षमतायें इतनी महान हैं कि अवर्णनीय हैं। गुरु साहिब के ये वचन मनुष्य की सारी दुविधाओं को मिटाने वाले थे। गुरु साहिब ने पहले उस परम सत्ता से पहचान कराई, जिसने इस सृष्टि को रचा है और चला रही है। यह एकमात्र सत्ता है जो निराकार है। इसके समान कोई और शक्ति नहीं है। वही सच्ची शक्ति है :

सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥
जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥ *(पन्ना ४६७)*

श्री गुरु नानक साहिब ने अपने उपरोक्त वचन में निराकार परम शक्ति को स्वामी, सच्चा साहिब और एक ही साहिब कहकर संबोधित किया। वही एक मालिक है जो संसार में सृजन कर रहा है और संसार को संभाल रहा है। देने वाला दाता वही है। संसार में

**ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: ९४१५९-६०५३३*

उसी को आयु, बुद्धि, ज्ञान, धन, प्रतिष्ठा और बल प्राप्त हो रहा है जिसे प्रभु दे रहा है। मनुष्य को कुछ भी मिल रहा है तो उसके हुक्म से। गुरु साहिब का यह शक्ति के एकत्व का विचार भ्रम के घोर अंधकार में सूरज की प्रखर किरणों की तरह था, जिससे लोगों में व्यापक स्तर पर जागृति आई और उन्हें राह दिखने लगी। सच और शक्ति को जगह-जगह खोजने और दुविधा में पड़े रहने वाले लोगों का भटकाव समाप्त हो गया। यह समाज की सोच में युगांतरकारी बदलाव था। श्री गुरु नानक साहिब ने निराकार परम शक्ति के दर्शन लोगों को कराये उसके गुणों के माध्यम से। उन्होंने कहा कि वही सच है और कर्त्ता है। वह सारे भय से मुक्त है और किसी भी वैर, कुविचार से रहित है। एक वही है जो काल-चक्र से ऊपर है और जन्म-मरण में नहीं है। संसार जिन गुणों और क्षमताओं को जानता है वह स्वाभाविक रूप से उनका जनक और स्वामी है, जिसकी थाह नहीं पाई जा सकती। गुरु साहिब ने परम शक्ति परमात्मा को संसार का एकमात्र सच कहा और उसी सच को सृष्टि की रचना में भी प्रकट होते देखा। उन्होंने कहा कि युगों-युगों तक सृष्टि की रचना के पूर्व घोर अंधकार था :

केते जुग वरते गुबारै ॥
ताड़ी लाई अपर अपारै ॥
धुंधूकारि निरालमु बैठा ना तदि धंधु पसारा हे ॥१॥
जुग छतीह तिनै वरताए ॥
जिउ तिसु भाणा तिवै चलाए ॥
तिसहि सरीकु न दीसै कोई आपे अपर अपारा हे ॥ *(पन्ना १०२६)*

घोर अंधकार में अपार शक्तियों का स्वामी परमात्मा गहरी समाधि लगाकर बैठा हुआ था। उस समय यह संसार नहीं था जो कि भांति-भांति की विषमताओं की जड़ है। इस प्रकार परमात्मा ने छत्तीस युग गुज़ार दिये। यह उसकी मर्ज़ी है जिससे वह चलता है और अपनी लीला दिखाता है। उसने एक ही इच्छा की-- *"कीता पसाउ एको कवाउ ॥"* और इतना विशाल संसार रच दिया, लाखों नदियां, समुद्र बना दिए जिनका वर्णन करना मानवीय सामर्थ्य से बाहर है। परम पिता ने चार युग बनाये जिनमें वह स्वयं व्यक्त हो रहा है। हर युग में उसकी इच्छा ही चल रही है। कोई और उसके समतुल्य नहीं है। जिस संसार को देख-देखकर मन विस्मित, मुग्ध और मोहित होता रहता है उस सृष्टि की रचना उसकी एक सहज, स्वाभाविक इच्छा से संभव हो गई :

हुकमी सहजे स्रिसटि उपाई ॥ *(पन्ना १०४३)*

श्री गुरु अमरदास जी के उपरोक्त वचन का आशय था कि सृष्टि की रचना की विशालता और विविधता को देखकर मनुष्य भले ही कितना भी विस्मित हो जाये किंतु फिर भी महान परमात्मा के गुणों की थाह नहीं पा सकता, जो अपार. . अपार. . अपार है। उसकी कोई सीमा नहीं है। परमात्मा के गुणों का श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विस्तार से उल्लेख मिलता है। वास्तव में उसके गुणों का गान ही भक्ति का मार्ग है। जो प्रमुख तत्व परमेश्वर के गुणों का प्रतिनिधित्व करता है उसे गुरु साहिबान ने 'सच' कहा-- *"आपे साचा एको सोई ॥"* एक वही सच है। इस सच से अधिक श्रेष्ठ और कल्याणकारी और कुछ नहीं है। परमात्मा के इस तत्व को सृष्टि की रचना में भी स्पष्टत: परिलक्षित होते देखा गया। उसने जब सृष्टि की रचना की तो इस तत्व को संसार का आधार बनाया।

सचै सचा तखतु रचाइआ ॥
निज घरि वसिआ तिथै मोहु न माइआ ॥
सद ही साचु वसिआ घट अंतरि गुरमुखि करणी सारी हे ॥१॥
सचा सउदा सचु वापारा ॥
न तिथै भरमु न दूजा पसारा ॥

सचा धनु खटिआ कदे तोटि न आवै बूझै को वीचारी हे ॥ (पन्ना १०५०)

श्री गुरु अमरदास जी ने उपरोक्त वचन में संसार को परमात्मा के तख़्त के रूप में देखा जहां बैठकर वह अपने आप को प्रकट कर रहा है। संसार परमात्मा की रचना है इसलिए वह भी सच से भरपूर है। इस संसार में वह सच का ही प्रसार कर रहा है। जिसने इस तत्व को जान लिया उसके जीवन के सारे विघ्न, कष्ट दूर हो जाते हैं और कभी भी वह दुख नहीं सहता। परमात्मा के मार्ग पर चलने वाले इस सच को अपने अंदर देखने में सफल हो जाते हैं और उनके सारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं। यह उन लोगों के लिए एक बड़ा उत्तर था जो सच को न समझने के कारण संसार में सारे दुखों के लिए परमात्मा को दोष देते रहते हैं और जीवन को निरर्थक बनाते हैं। गुरु साहिबान द्वारा प्रकट किया गया सृष्टि-रचना का यह सूत्र लाखों, करोड़ों निराश लोगों के मन में आशा की किरण जगाने वाला था। जो लोग संसार और जीवन को बोझ समझते थे और शक्तिशाली वर्ग के शोषण और अत्याचारों से भयभीत रहते थे, उन्हें सच का महत्त्व समझ में आया और वे संसार को मुक्ति के माध्यम के रूप में देखने लगे।

श्री गुरु नानक साहिब ने एक और बड़ी महत्त्वपूर्ण बात कही कि परमात्मा ने मात्र रचने के लिए ही सृष्टि की रचना नहीं कर दी, उसने बड़े प्रेम और चाव से संसार को बनाया और उतने ही चाव से इसे चला भी रहा है। इससे संसार की रचना के पीछे का कल्याणकारी तत्व भी व्यक्त हुआ जो मनुष्य को आश्वस्त करने वाला था।

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥
दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥
(पन्ना ४६३)

गुरु साहिब ने कहा कि परमात्मा की महानता है कि उसे किसी ने नहीं बनाया। उसने स्वयं अपने आप को बनाया और अपनी सत्ता को स्थापित किया। उसके गुण उसके अपने हैं, किसी से लिए नहीं गये। इसी तरह उसने स्वयं सृष्टि, बिना किसी की सहायता के बनाई ही नहीं, संवारी और सजाई भी है और उसमें अपने आप को बड़े ही चाव से टिका भी दिया है। सृष्टि की व्यापकता और विविधता परमात्मा की मनोहारी कृति का पहला प्रमाण है। सृष्टि के इतने रंग हैं कि एक जीवन कम पड़ जाये उन्हें देखने और समझने के लिए। निम्न शबद में श्री गुरु नानक साहिब ने इस विविधता के सार रूप में दर्शन कराये :

पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥
दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ॥
अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ॥
सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ॥
नानक जंत उपाइ कै संमाले सभनाह ॥
जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ॥
(पन्ना ४६७)

परमात्मा ने जीव बनाये, वनस्पतियां बनाईं, पवित्र स्थान बनाये, नदियां, सागर बनाये, मेघ बनाये, खेत बनाये, उसने कितने ही टापू बनाये, पर्वत, द्वीप, महाद्वीप बनाए, सूर्य, नक्षत्र-मंडल बनाये। परम पिता ने जीव-उत्पत्ति के भी विभिन्न प्रकार बना दिए। अंडे से पैदा होने वाले, गर्भ से पैदा होने वाले, धरती से उत्पन्न होने वाले, पसीने से पैदा होने वाले जीव बनाये। उसने समुद्र, पहाड़ और जीव-जंतु बनाये जिनकी संख्या भी वही जान सकता है। जिस सृजनहार ने यह सब बनाया है वह उन सबकी चिंता, सबका पालन-पोषण भी कर रहा है अर्थात् इस सृजन में उसका प्रेम और अनुराग निहित है। सृष्टि की यह विविधता, मन की कल्पना को मनोहर बनाती हुई दूर ले

जाती है।

घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ॥
गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥
सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥
नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥
(पन्ना ४६५)

संसार के जिन अंशों को नितांत साधारण घटनायें मान कर उपेक्षित कर दिया गया था, श्री गुरु नानक देव जी में उन अंशों में भी परमात्मा का अतीव सौंदर्य देखने की शक्ति थी। अभी तक संसार रंग-बिरंगे फूलों, पशु-पक्षियों, नदियों, पहाड़ों में ही परमात्मा की लीला देखता आया था। गुरु साहिब ने कहा कि समय के घंटे गोपियों की तरह हैं जो श्री कृष्ण रूपी पहरों को अपनी मोहनी मुद्राओं से आकर्षित कर रहे हैं। पवन, पानी तथा अग्नि जैसे उनके आभूषण हैं और चंद्रमा व सूरज उनके रूप को निखार रहे हैं। गुरु साहिब ने पूरी धरती को रूप और यौवन से मालामाल स्थान के रूप में देखा, जहां सारे जीव जीवन की गुत्थी सुलझाने में उलझे हुए हैं। जो सृष्टि के सच को समझ लेते हैं उनका उद्धार हो जाता है और जो इस ज्ञान से विहीन रह जाते हैं उनका जीवन व्यर्थ चला जाता है। इस तरह गुरु साहिब ने साफ कर दिया कि संसार के तत्व को समझना ही मुक्ति की राह खोलने वाला है। गुरु साहिब ने सृष्टि के सौंदर्य में ही परमात्मा की स्तुति के दर्शन कराये जिसे संसार का सबसे श्रेष्ठ और मोहक दृश्य कहा जायेगा जो सृष्टि की रचना के बाद से निरंतर चल रहा है और जिसे देखने, अनुभव करने के बाद मन की सारी कामनायें और वेग शांत हो जाते हैं तथा अद्‌भुत शांति व निर्मलता प्राप्त होती है।

ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए और अपने मन के समर्पण को व्यक्त करने के लिए लोगों में आरती की एक विधि अत्यंत लोकप्रिय थी जिसमें धातु की एक थाली में पूजा-सामग्री रखकर और दीया जलाकर भजन गाया जाता था तथा उस थाली को घुमाया जाता था। श्री गुरु नानक साहिब ने इस विधि का खंडन करते हुए कहा कि यह कार्य (आरती) प्रकृति स्वयं कर रही है :

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥
धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥ *(पन्ना ६६३)*

श्री गुरु नानक साहिब को आकाश एक थाल की तरह नज़र आया जिसमें चंद्रमा और सूरज प्रकाशमान दीपक की तरह सुशोभित हो रहे हैं। नक्षत्र-मंडल के सारे चमकीले तारे मोतियों की तरह लग रहे हैं जो इस थाल में जड़े हुए हैं। चंदन के पेड़ों से निकलती हुई सुगंध हवन-सामग्री का कार्य कर रही है और वायु जैसे चंवर झुला रही है। सारी वनस्पतियां अर्पित हुए फूलों जैसी हैं। जिन वस्तुओं को पवित्र मान कर उनका प्रयोग पूजा में किया जाता था, उनकी पवित्रता और शुद्धता को सारी सृष्टि में इतने व्यापक स्तर पर देख पाना जहां गुरु साहिब की महानता का परिचायक था वहीं मनुष्य को परमात्मा की अकथ्य महिमा से जोड़ने का सार्थक प्रयास भी था।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जहां परमात्मा को सच्चा सृजनहार और सृष्टि को उसकी सर्वश्रेष्ठ रचना कहा गया वहीं मनुष्य को संसार की निस्सारिता से भी अवगत कराया गया। मनुष्य से यह अपेक्षा की गई कि वह संसार में फैले हुए माया के जाल को पहचाने और इसमें उलझ कर अपना जीवन व्यर्थ न करे क्योंकि यह संसार चौपड़ के खेल की तरह है जिसे परमात्मा बड़ी मौज में खेल रहा है :

तुधु संसारु उपाइआ ॥
सिरे सिरि धंधे लाइआ ॥

वेखहि कीता आपणा करि कुदरति पासा ढालि जीउ ॥ *(पन्ना ७१)*

परमात्मा ने सृष्टि की रचना कर माया का ऐसा चक्र चला दिया है कि हर मनुष्य अपने-अपने कार्य में व्यस्त हो गया। कोई रूप और काम के पीछे भाग रहा है, कोई धन-दौलत के लिए, कोई पद, प्रतिष्ठा और ताकत के लिए, कोई वंश-परिवार के लिए और कोई पुण्य-पाप में ही व्यस्त है। कोई ऐसा नहीं है जो निश्चित, खाली बैठा हो। कोई किसी को कुछ दे रहा है और कोई किसी से छीन रहा है। सारा कुछ इस तरह अप्रत्याशित ढंग से चल रहा है जैसे बिसात पर चौपड़ की बाज़ी कभी कोई, कभी कोई चाल चल जाती है। परमात्मा ऐसा इसलिए कर पा रहा है क्योंकि उसने स्वयं को सृष्टि के घट-घट में प्रकट किया हुआ है। पूरी सृष्टि को गुरबाणी में परमात्मा का ही रूप कहा गया है। इससे मनुष्य, सृष्टि और परमात्मा में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष दोनों ही तरह का सम्बंध स्थापित हो गया जो मनुष्य को सच से जोड़ने वाला और पल-पल परमात्मा की मौजूदगी का एहसास कराने वाला था कि वह अपने जीवन को निरर्थक न जाने दे। यह निराकार परमात्मा को सृष्टि के आकार में देखकर उसमें विश्वास को दृढ़ करने का एक आधार था जो परमात्मा से जोड़ने और उसके मार्ग पर चलने के लिए अति आवश्यक था। इससे उसकी शक्ति और उसकी लीला को समझने में भी सहायता मिली। यह धर्म का सबसे सहज और विश्वसनीय मार्ग था जो गुरु साहिबान ने दिखाया था। श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी द्वारा सृष्टि-रचना में व्यक्त हुई परमात्मा की शक्ति को जानने में सहायता मिली, जिसके बारे में लोग संशय और भ्रम में थे।

चारि कुंट चउदह भवन सगल बिआपत राम ॥
नानक ऊन न देखीऐ पूरन ता के काम ॥१४॥
पउड़ी ॥
चउदहि चारि कुंट प्रभ आप ॥
सगल भवन पूरन परताप ॥
दसे दिसा रविआ प्रभु एकु ॥
धरनि अकास सभ महि प्रभ पेखु ॥
जल थल बन परबत पाताल ॥
परमेस्वर तह बसहि दइआल ॥
सूखम असथूल सगल भगवान ॥
नानक गुरमुखि ब्रहमु पछान ॥ *(पन्ना २९९)*

उपरोक्त वचन में चार दिशाओं के साथ ही चौदह लोकों-- भूर, भवर, स्वर, महर, जन, तप, सत, अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल और पाताल के बारे में भी सूचना मिलती है जिसमें से सात धरती के ऊपर और सात धरती के नीचे हैं। इन सबको परमात्मा ने भली प्रकार और पूर्णता से बनाया है जिसमें कोई कमी नहीं निकाली जा सकती। वह सभी जगह प्रकट है और सभी जगह उसकी आबा पूरी तरह एक जैसी ही प्रत्यक्ष हो रही है। वह दसों दिशाओं में मौजूद है। वह धरती और आकाश में है, जल, थल, वन, पर्वतों और पाताल में भी है। वह सूक्ष्म और स्थूल में भी है। यही नहीं, उसने लाखों ब्रह्मांड रचे। परम पिता की रचना का कोई अंत नहीं दिखता। कितनी ही रचनायें हैं और एक-एक रचना की कितनी गिनती है, यह कह पाना असंभव है। सारी रचनायें एक दूसरे से भिन्न हैं। ब्रह्मांड का इतना व्यापक दर्शन और वर्णन गुरु साहिबान की आलौकिक दृष्टि का परिणाम था। संसार आज भी भ्रम में विचर रहा है और गिने-चुने ग्रहों को खोज कर स्वयं को महा बौद्धिक साबित कर रहा है, जबकि पूरे संसार का सारा ज्ञान श्री गुरु ग्रंथ साहिब में वर्णित सृष्टि-रचना से संबंधित तथ्यों के सामने पासंग भर भी नहीं ठहरता। आज यह कहा जा सकता है कि जितने भी वैज्ञानिक अनुसंधान हो रहे हैं उनके सूत्र

गुरबाणी में पहले से ही मौजूद हैं, जिन्हें गुरु साहिबान ने विस्तार से प्रतिपादित किया है। आज विज्ञान और वैज्ञानिक सृष्टि सम्बंधी जो खोजें कर रहे हैं उनका उद्देश्य महज सूचना प्राप्ता करना है अथवा अपनी बुद्धिमत्ता सिद्ध करना है। गुरु साहिबान ने इस बारे में जो चर्चा की उसका उद्देश्य पूर्णत: भिन्न था। गुरु साहिबान ने इस माध्यम से लोगों को परमात्मा की अपार शक्ति और उसकी सर्वव्यापकता से अवगत कराया और उन्हें परमात्मा के निकट ले गये। परमात्मा निराकार होते हुए भी दृश्यमान और अलभ्य होते हुए भी सर्वसुलभ हो गया। घट-घट में परमेश्वर के वास की अवधारणा ने उसे मन के भीतर ही खोज लेने की राह दिखाई। इसमें मानव-कल्याण का विचार निहित था। गुरु साहिबान ने सृष्टि-रचना संबंधी विस्तृत चर्चा की और इसमें परमात्मा को भी देखा, किंतु मनुष्य को इसमें पूरी तरह से रम न जाने के प्रति सुचेत भी किया और कहा कि जो दिख रहा है वह सच नहीं है अर्थात् रहने वाला नहीं है, विनष्ट हो जाने वाला है। संसार का ऐसा खेल परमात्मा ने रचा है कि एक जन्म लेकर आ रहा है और एक जन्म भोग कर जा रहा है। सृजन और विनाश की यह प्रक्रिया बिना रुके रात-दिन चल रही है। कुछ भी स्थिर नहीं है। हर किसी को जाना है।

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥
जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥
(पन्ना १४२७)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कहा कि जगत की रचना पानी के बुदबुदे की तरह है जो बनते एवं नष्ट होते रहते हैं और कभी थिर नहीं रहते। उन्होंने संसार को बालू की दीवार की संज्ञा भी दी :

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥
कहि नानक थिरु ना रहै जिउ बालू की भीति ॥
(पन्ना १४२९)

जो भी जीव संसार में आया है उसे जाना है। यह अटल नियम है, प्रक्रिया है। जब परमेश्वर की आज्ञा होगी जीव को जाना ही होगा। बड़े-बड़े शक्तिशाली राजा, महाराजा चले गये, ज्ञानी और महात्मा चले गये। कोई भी नहीं रहा। मनुष्य को गुरबाणी में एक रात के अतिथि की उपमा दी गई है। उसके अस्तित्व को एक दम का बताया गया है। यह निश्चित नहीं कि अगला श्वास आता है या नहीं। इसके बाद भी परमात्मा द्वारा संसार रचने का भेद खोलते हुए गुरबाणी कहती है कि जीवन इसलिए मिला है कि मनुष्य आवागमन के चक्र से निकल सके और मुक्त होकर परमात्मा में समाहित हो जाये। जो परमेश्वर की कृपा से उसका नाम जपते हुए ऐसा करने में सफल हो जाते हैं या उस मार्ग पर चल पड़ते हैं, उनके लिए यह संसार सच हो जाता है। जो संसार की वास्तविकता को न जानते हुए इसकी बाहरी मोह-माया में लिप्त हो जाते हैं और वास्तविक मरोरथ को समझ नहीं पाते, वे आवागमन के चक्र में भटकते, जन्म लेते और मरते रहते हैं तथा दुख सहते हैं। संसार का उपयोग परमात्मा के मार्ग पर चलने के लिए करना है। इसके लिए परमात्मा से उसकी कृपा की प्रार्थना ही संसार-रचना के भेद को जान लेना है और जीवन के सच्चे लक्ष्य की ओर अग्रसर हो पड़ना है :

सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥
अंनु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भंनि तरु ॥
अरदासि सुणी दातारि होई सिसटि ठरु ॥
(पन्ना १२५१)

गुरमति की राह पर चलते हुए यह संसार जीवन-मनोरथ में सहायक हो जाता है। ❂

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में मोह सम्बंधी आए निर्देश

*-डॉ. परमजीत कौर**

दुनिया का मोह बहुत प्रबल है। इसमें सारा संसार डूबा हुआ है। मोह ही मनुष्य के मन में परिवार की ममता पैदा करता है और मन में तृष्णा तथा विकारों को बढ़ाता है। मोह के कीचड़ में फंसे हुए जीव के लिए उसमें से निकलना कठिन हो जाता है :

पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥ (पन्ना ३५७)

भक्त शेख़ फरीद जी के अनुसार दुनिया का मोह छिपी हुई आग है-- "*..दुनीआ गुझी भाहि।*" संसार का मोह मानों ऐसी कोठरी है जो कालिख से भरी हुई है। उसमें सारे जीव, चाहे वे भूपति पंडित हैं, चाहे जटाधारी सन्यासी हैं, गिर पड़े हैं तथा उनकी आंखें अज्ञानता के कारण बंद हैं। इस कोठरी में गिरकर बाहर निकलने वाले जीव भाग्यशाली होते हैं :

--कबीर जगु काजल की कोठरी अंध परे तिस माहि ॥
हउ बलिहारी तिन कउ पैसि जु नीकसि जाहि ॥ (पन्ना १३६५)

--माइआ मोहु सबलु है भारी मोहु कालख दाग लगीजै ॥ (पन्ना १३२४)

श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं :

जेता मोहु परीति सुआद ॥
सभा कालख दागा दाग ॥
दाग दोस मुहि चलिआ लाइ ॥
दरगह बैसण नाही जाइ ॥ (पन्ना ६६२)

सारा संसार मोह में डूबा हुआ है। कोई विरला गुरु की मति पर चलने वाला मनुष्य ही इसमें से निकल सकता है :

एतु मोहि डूबा संसारु ॥
गुरमुखि कोई उतरै पारि ॥ (पन्ना ३५६)

मोह का कारण माया है। माया केवल धन को ही नहीं कहा गया, बल्कि जिस भी कारण से मनुष्य को परमात्मा भूल जाता है, मन में जिस दुनियावी पदार्थ के साथ मोह पैदा हो जाता है, वह सब माया है :

एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ (पन्ना ९२१)

मन को आकर्षित करने वाली माया कई ढंग से जीवों को अपने मोह में फंसा लेती है। जो जीव माया-मोह में फंसकर इसका गुलाम हो जाता है उसका जीवन तनाव तथा दुखपूर्ण हो जाता है :

माइआ होई नागनी जगति रही लपटाइ ॥
इस की सेवा जो करे तिस ही कउ फिरि खाइ ॥ (पन्ना ५१०)

इससे प्रभावित मनुष्य परमात्मा का नाम नहीं जप सकता। मोह परिवार, मित्र, माता-पिता, स्त्री, पति, सम्बंधी किसी का भी हो, मन को स्थिर नहीं रहने देता। मन सदा चिंताग्रस्त तथा व्याकुल रहता है :

--मोहनी महा बचित्रि चंचलि अनिक भाव दिखावए ॥
होइ ढीठ मीठी मनहि लागै नामु लैण न आवए ॥ (पन्ना ८४७)

*६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर- १३५००१ (हरियाणा); फोन : ९८१२३-५८१८६

-माइआ मोहु सभु बरलु है दूजै भाइ खुआई राम ॥
माता पिता सभु हेतु है हेते पलचाई राम ॥
(पन्ना ५७१)
--बाबा माइआ मोह हितु कीन्ह ॥
जिनि गिआनु रतनु हिरि लीन्ह ॥ (पन्ना ४८२)

माया-मोह में लिप्त मनुष्य को अन्य कुछ दिखाई नहीं देता। मोहग्रस्त जीव परमात्मा पर विश्वास नहीं करता। वह प्रभु को अपने से दूर समझता है तथा दुखी होता है :

--मोहि मोहिआ जानै दूरि है ॥
कहु नानक सदा हदूरि है ॥ (पन्ना २१०)
--माइआ मोहि हरि चेतै नाही ॥
जमपुरि बधा दुख सहाही ॥
अंना बोला किछु नदरि न आवै मनमुख पापि पचावणिआ ॥ (पन्ना १११)
--माइआ मोह परीति ध्रिगु सुखी न दीसै कोइ ॥
(पन्ना ४७)

धन का मोह, मान-प्रतिष्ठा, रुतबे की चाह, भौतिक पदार्थों का आकर्षण सब माया के रूप हैं। इन सबके अधीन हुआ व्यक्ति दुर्मति के कारण भटकता रहता है। मोह में फंसकर भटकते हुए जीव की स्थिति का वर्णन करते हुए भक्त रविदास जी फरमान करते हैं :

माटी को पुतरा कैसे नचतु है ॥
देखै देखै सुनै बोलै दउरिओ फिरतु है ॥१॥ रहाउ ॥
जब कछु पावै तब गरबु करतु है ॥
माइआ गई तब रोवनु लगतु है ॥१॥
मन बच क्रम रस कसहि लुभाना ॥
बिनसि गइआ जाइ कहूं समाना ॥ (पन्ना ४८७)

धन के मोह के कारण मनुष्य अधिक संतप्त रहता है। जैसे-जैसे धन बढ़ता है, तृष्णा बढ़ती जाती है। मनुष्य की मानसिक शांति धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है, परिवार में क्लेश पैदा हो जाते हैं, भाई-बंधुओं से झगड़ा हो जाता है। चाहे सृष्टि के सारे धन-पदार्थ एकत्र कर लिए जाएं परंतु मन संतुष्ट नहीं होता। श्री गुरु अरजन देव जी धन के मोह में लिप्त जीव की मानसिक स्थिति का वर्णन कर रहे हैं :

तीनि भवन की लखमी जोरी बूझत नाही लहरे ॥
बिनु हरि भगति कहा थिति पावै फिरतो पहरे पहरे ॥
अनिक बिलास करत मन मोहन पूरन होत न कामा ॥
जलतो जलतो कबहू न बूझत सगल ब्रिथे बिनु नामा ॥ (पन्ना २१५)

धन के मोह में फंसे हुए जीव को जीवन-मार्ग में बहुत दुख सहना पड़ता है, क्योंकि उसे परमात्मा याद नहीं रहता :

माइआ मोहि हरि सिउ चितु न लागै ॥
दूजै भाइ घणा दुखु आगै ॥ (पन्ना १०५२)

ऐसा मनुष्य छल-कपट करता है तथा असत्य के मार्ग पर चल पड़ता है; गुरु की शरण न लेकर सदा मन के पीछे चलता है :

मनमुखि माइआ मोहु है नामि न लगै पिआरु ॥
कूड़ु कमावै कूड़ु संघरै कूड़ि करै आहारु ॥
बिखु माइआ धनु संचि मरहि अंति होइ सभु छारु ॥ (पन्ना १४२३)

श्री गुरु नानक देव जी ऐश्वर्य के साधन, महल, सुंदर स्त्री, हीरे-रत्न, कामयाबी के नशे तथा ऋद्धि-सिद्धि के मोह में फंसे हुए जीव को सचेत करते हुए समझाते हैं :

मोती त मंदर ऊसरहि रतनी त होहि जड़ाउ ॥
कसतूरि कुंगू अगरि चंदनि लीपि आवै चाउ ॥
मतु देखि भूला वीसरै तेरा चिति न आवै नाउ ॥
(पन्ना १४)

भक्त शेख़ फरीद जी समझाते हुए फरमान करते हैं :

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥

मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥
(पन्ना १३८०)

मनुष्य यह जानता है कि मां-बाप, भाई पुत्र, पति-पत्नी, रिश्तेदार, ये सब जीवित रहते ही साथ देते हैं। कई बार तो विपत्ति आने पर साथ छोड़ भी देते हैं। मनुष्य फिर भी इन सबके मोह में पड़ा हुआ सारा जीवन व्यर्थ गंवा देता है। जीव के गले में पड़ी हुई मोह की फांस बड़ी पक्की होती है :

. . . अति तीख्यण मोह की फास ॥ (पन्ना २०४)

मोह में लिप्त मनुष्य स्वार्थी बन जाता है। अपने मान-सम्मान, उपलब्धियों, महल, ज़मीन-जायदाद, ऐश्वर्य के साधन आदि को देख-देखकर वह अहंकार करने लगता है। वह परमात्मा से अपने अलग अस्तित्व का भ्रम पालता रहता है तथा मानसिक शांति खो बैठता है।

मोह मनुष्य को संकीर्ण बना देता है। वह हर समय मेर-तेर के चक्कर में फंसा रहता है। जीवन-मार्ग से भटककर आत्मिक जीवन से दूर होता चला जाता है :

जेता मोहु हउमै करि भूले मेरी मेरी करते छीनि खरे ॥
तनु धनु बिनसै सहसै सहसा फिरि पछुतावै मुखि धूरि परे ॥ (पन्ना १०१४)

जैसे कोई विक्षप्त व्यक्ति सारा दिन व्यर्थ का सामान एकत्र करके गठरी बांधकर सिर पर उठाये फिरता है, वो चाहे कितना भी परेशान क्यों न हो जाये, उस गठरी को फेंकता नहीं, वैसे ही अहंकार तथा लोकाचार में फंसा हुआ मनुष्य माया-मोह की पोटली को उठाये फिरता है। इसे छोड़ना उसके लिए कठिन लगता है :

फरीदा दर दरवेसी गाखड़ी चलां दुनीआं भति ॥
बंन्हि उठाई पोटली किथै वंञा घति ॥
(पन्ना १३७७)

मोहपूर्ण, गहरे तथा भयानक संसार-समुद्र को पार करके आत्मिक जीवन जीना मानो ऊंचे, भयानक पहाड़ पर चढ़ना है :

डूंगरु देखि डरावणो पेईअड़ै डरीआसु ॥
ऊचउ परबतु गाखड़ो ना पउड़ी तितु तासु ॥
गुरमुखि अंतरि जाणिआ गुरि मेली तरीआसु ॥
(पन्ना ६३)

गुरु-शबद का आश्रय लिए बिना यह चढ़ाई चढ़ी नहीं जा सकती अर्थात् मोह के जाल से मुक्त नहीं हुआ जा सकता। जिस मनुष्य का हृदय गुरु-शबद के साथ जुड़ जाता है, जो गुरु-शबद की विचार करता है, गुरबाणी में निर्दिष्ट सिद्धांतों के अनुसार अपना जीवन बनाने का यत्न करता है, उसका मन भटकता नहीं। ऐसा जीव मोह-माया से मन को मुक्त करने का यत्न करता रहता है :

--गुर कै सबदि रिदै दिखाइआ ॥
माइआ मोहु सबदि जलाइआ ॥ (पन्ना १२०)
--नानक माइआ का दुखु तदे चूकै जा गुर सबदी चितु लाए ॥ (पन्ना २४७)

गुरबाणी के सिद्धांतों के अनुसार जीवन बनाने से मन में प्रभु के प्रति प्रेम पैदा हो जाता है तथा मन परमात्मा के नाम-सिमरन में लग जाता है। भक्त रविदास जी समझाते हैं कि प्रभु-प्रीति से ही मोह के बंधन से मुक्त हुआ जा सकता है :

जउ हम बांधे मोह फास हम प्रेम बधनि तुम बाधे ॥
अपने छूटन को जतनु करहु हम छूटे तुम आराधे ॥ (पन्ना ६५८)

परमात्मा को भूलकर मोह में लिप्त अज्ञानता की नींद में सोये हुए जीवों को जागृत करने के लिए प्रेरित करते हुए गुरु साहिब समझा रहे हैं कि हे भाई! सारे सांसारिक पदार्थों के मोह को

त्यागकर परमात्मा का ध्यान धर। दुनिया के ऐश्वर्य, उपलब्धियों का अहंकार, पुत्र-कलत्र का मोह मन से दूर करके अपना मन परमात्मा को अर्पण कर। जो दिन परमात्मा के नाम-सिमरन के बिना मंद कर्मों में व्यतीत कर दिया, वह व्यर्थ हो गया। परमात्मा के नाम के बिना कुछ भी काम नहीं आता। दुनिया का मोह और सारे तामझाम मिथ्या हैं :

--जागु रे मन जागनहारे ॥
बिनु हरि अवरु न आवसि कामा झूठा मोहु मिथिआ पसारे ॥ (पन्ना ३८७)

--बिनु हरि सिमरन सुखु नही पाइआ ॥
आन रंग फीके सभ माइआ ॥ (पन्ना १९४)

--मोहु अरु भरमु तजहु तुम बीर ॥
साचु नामु रिदे रवै सरीर ॥ (पन्ना ३५६)

मोह से मुक्त होकर ही परमात्मा का सामीप्य प्राप्त किया जा सकता है :

लोग कुटंब सभहु ते तोरै तउ आपन बेढी आवै हो ॥ (पन्ना ६५७)

संक्षेप में कहा जा सकता है कि दुनिया का ऐश्वर्य, विषयों का भोग मन को मोहित करता है। धन-विद्या आदि का मान भी आह्लादित करता है। पुत्र-कलत्र, भाई-बंधु का मोह देखने में प्रिय लगता है परंतु परमात्मा के नाम के मुकाबले में दुनिया के सारे सुख महत्त्वहीन हैं। इन सुखों के साथ मोह करने से मनुष्य जीवन का लक्ष्य भूल जाता है जिससे उसका जीवन व्यर्थ हो जाता है। दुनिया के मोह से मन को मुक्त करना हो तो श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार सतसंगत इसमें विशेष रूप से सहायक होती है। जो सतसंगत करता है वह मोह के जाल से मुक्त हो जाता है :

--जो मागै सो भूखा रहै ॥
इसु संगि राचै सु कछू न लहै ॥
इसहि तिआगि सतसंगति करै ॥
वडभागी नानक ओहु तरै ॥ (पन्ना ८९२)

--निकसु रे पंखी सिमरि हरि पांख ॥ . .
भ्रम की कूई त्रिसना रस पंकज अति तीख्यण मोह की फास ॥ (पन्ना २०४)

परमात्मा की कृपा हो तो ही मन का अज्ञान, मन का मोह दूर होता है :

नदरि करे ता एहु मोहु जाइ ॥
नानक हरि सिउ रहै समाइ ॥ (पन्ना ३५६)

आवश्यकता है परमात्मा की कृपा के पात्र बनने की। इस शुभ काम में देर भली नहीं।



अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में क्रोध सम्बंधी आए फरमान

*-स. गुरदीप सिंघ**

श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि झगड़े का मूल कारण क्रोध है। क्रोध के कारण दया नहीं पैदा होती। क्रोध के कारण जीव का स्वभाव नीच बन जाता है। क्रोध के वशीभूत होकर मनुष्य आपस में कई प्रकार के झगड़े करते हैं और अपना जीवन दुखी बना लेते हैं। सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि अकाल पुरख से यह मांग करनी चाहिए कि हे दीनों का दर्द निवारण करने वाले और दुखों का नाश करने वाले प्रभु जी! आपके चरणों में विनती है कि सब जीवों की क्रोध से रक्षा करें। जब ऐसी विनती मन से निकलती है तब क्रोध हृदय से निकल जाता है :

हे कलि मूल क्रोधं कदंच करुणा न उपरजते ॥
बिखयंत जीवं वस्यं करोति निरत्यं करोति जथा मरकटह ॥
अनिक सासन ताड़ंति जमदूतह तव संगे अधमं नरह ॥
दीन दुख भंजन दयाल प्रभु नानक सरब जीअ रख्या करोति ॥ *(पन्ना १३५८)*

क्रोध के वेग में मनुष्य कई अपराध करता है। क्रोध के कारण शरीर को रोग लग जाते हैं। नब्ज़ की चाल तेज हो जाती है। शरीर कांपने लगता है। क्रोध नर्वस सिस्टम (नाड़ी-तंत्र) को बिगाड़ कर बुद्धि भ्रष्ट कर देता है। खुशी और चैन छिन जाता है। भक्त शेख़ फरीद जी उच्चारण करते हैं कि बुराई करने वालों के साथ भी भलाई करनी चाहिए। गुस्सा मन में नहीं आने देना चाहिए। इस प्रकार कोई रोग नहीं लगता और मन सदा खुश रहता है :

फरीदा बुरे दा भला करि गुसा मनि न हढाइ ॥
देही रोगु न लगई पलै सभु किछु पाइ ॥
(पन्ना १३८१)

श्री गुरु अमरदास जी उच्चारण करते हैं कि मनुष्य के शरीर में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पांच चोर निवास करते हैं। ये पांचों चोर मनुष्य के अंदर रहकर मनुष्य को आत्मिक जीवन देने वाला नाम-धन लूटते रहते हैं। अपने मन के पीछे चलने वाले मनुष्य इसे समझ नहीं पाते। जब सब कुछ लुटा बैठते हैं तो दुखी होते हैं। तब कोई पुकार नहीं सुनता, कोई भी सहायता नहीं करता :

इसु देही अंदरि पंच चोर वसहि कामु क्रोधु लोभु मोहु अहंकारा ॥
अंम्रितु लूटहि मनमुख नही बूझहि कोइ न सुणै पूकारा ॥ *(पन्ना ६००)*

अधूरी कामनाएं, अधूरी इच्छाएं क्रोध को बढ़ाती हैं। क्रोध का कारण कामनाओं का वेग है। क्रोध बेवकूफी से शुरू होता है और इसका अंत पश्चाताप पर होता है। क्रोध अमन, शांति और खुशी का दुश्मन है। क्रोधी किसी की बात नहीं सुनता। क्रोध आंधी की तरह आता है और दुख तथा शर्मसारता पीछे छोड़ जाता है। क्रोध द्वेष से उत्पन्न होता है। क्रोध को जज़्बा भी कहा गया है, जिस पर मनुष्य काबू न पा सके तो वह विकार बन जाता है। गुरबाणी में इस विकार से बचे रहने पर ज़ोर दिया गया है। श्री गुरु अमरदास जी फरमान करते हैं कि

**३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : ९८८८१२६६९०*

जो व्यक्ति क्रोध में आकर दूसरों के साथ झगड़ा करता है वह हमेशा दुख पाता है। जो मनुष्य परमात्मा के नाम का जाप करता है वह हर समय विकारों से बचा रहता है :

अति करोध सिउ लूझदे अगै पिछै दुखु पावहि ॥
(पन्ना १०८९)

जब मनुष्य सदा थिर रहने वाले परमात्मा से प्यार करता है तब उसे गुरु की बाणी, गुरु का शबद यथार्थ प्रतीत होता है। गुरु के शबद द्वारा ही क्रोध दूर करके परमात्मा का नाम मनुष्य के मन में आकर बसता है। परमात्मा के नाम का पवित्र मन द्वारा ही सिमरन किया जा सकता है। जब मनुष्य सिमरन करता है तब विकारों से निजात पाने का रास्ता मिल जाता है :

सचु बाणी सचु सबदु है जा सचि धरे पिआरु ॥
हरि का नामु मनि वसै हउमै क्रोधु निवारि ॥
मनि निरमल नामु धिआईऐ ता पाए मोख दुआरु ॥
(पन्ना ३३)

निर्दयता, मोह, लोभ और क्रोध ये चार आग की नदियां हैं। जो मनुष्य इन नदियों में प्रवेश करते हैं वे सब इसमें जल जाते हैं। प्रभु की कृपा से गुरु के चरणों में लगकर ही इन नदियों को पार किया जा सकता है :

हंसु हेतु लोभु कोपु चारे नदीआ अगि ॥
पवहि दझहि नानका तरीऐ करमी लगि ॥
(पन्ना १४७)

क्रोध को चंडाल कहा गया है, क्योंकि क्रोध निर्दयी होता है। जब क्रोध आता है तब माता-पिता, दोस्त-मित्र, अपना-पराया किसी का लिहाज़ नहीं रहता। दूसरों की निंदा करना अपने ही मुख में पराई मैल पाना है :

पर निंदा पर मलु मुख सुधी अगनि क्रोधु चंडालु ॥ *(पन्ना १५)*

श्री गुरु रामदास जी उच्चारण करते हैं कि जिस मनुष्य के अंदर चंडाल क्रोध बसता है उससे दूर ही रहना चाहिए :

ओना पासि दुआसि न भिटीऐ जिन अंतरि क्रोधु चंडाल ॥ *(पन्ना ४०)*

श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि जो मनुष्य परमात्मा के नाम-रस में डूबा रहता है, प्रभु-प्रेम में मस्त रहता है, उसके अंदर से काम, क्रोध, मोह, लोभ आदि विकारों के चसके खत्म हो जाते हैं। किसी प्रकार का जादू-टोना उस पर असर नहीं करता। कभी बुरी नज़र उसे नहीं लगती। प्रभु-प्रेम की मस्ती में डूबा रहने के कारण आत्मिक आनंद की प्राप्ति हो जाती है :

काम क्रोध मद मान मोह बिनसे अनरागै ॥
आनंद मगन रसि राम रंगि नानक सरनागै ॥
(पन्ना ८१८)

श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि माया से ग्रस्त मनुष्य काम, क्रोध, अहंकार में फंसकर ख्वार होते हैं। परमात्मा के सेवक प्रभु-नाम का सिमरन करके काम, क्रोध, अहंकार से बचे रहते हैं :

कामि क्रोधि अहंकारि विगूते ॥
हरि सिमरनु करि हरि जन छूटे ॥
(पन्ना ३८८)

क्रोध मनुष्य के दैविक और नैतिक गुण सत, संतोष, दया, धर्म, क्षमा, नम्रता, प्यार, धैर्य, सेवा-भाव, परोपकार और हमदर्दी को खत्म कर देता है। क्रोध मनुष्यों को पाप-कर्मों में लगा देता है। क्रोध अग्नि है। क्रोध का विकार आते ही शरीर जलने लगता है। श्री गुरु अमरदास जी का फरमान है कि हर जीव काम-क्रोध में जल रहा है। गुरु की शरण में आने से ही मन वश में आता है :

कामि करोधि जलै सभु कोई ॥
सतिगुर सेवे मनु वसि आवै मन मारे मनहि

समाइदा ॥ *(पन्ना १०६२)*

श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि जीव जितना अहंकारी हो उतना ही क्रोधी होता है। यदि किसी के मन में क्रोध स्थायी रूप से बना रहे, अहंकार बसा रहे और वो कई प्रकार की धार्मिक क्रियाएं भी करता रहे, ऐसे में मन की मैल दूर नहीं होती :

मन महि क्रोधु महा अहंकारा ॥
पूजा करहि बहुतु बिसथारा ॥ *(पन्ना १३४८)*

श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि जो मनुष्य सफेद धोती पहनते हैं, माथे पर तिलक लगा लेते हैं, गले में माला डाल लेते हैं, वेद-मंत्र पढ़ते हैं, मगर उनके मन में क्रोध प्रबल है तो उनका यह प्रयास इस प्रकार है जैसे नाट्यशाला में नाट्य-विद्या ले रहे हैं :

धोती ऊजल तिलकु गलि माला ॥
अंतरि क्रोधु पड़हि नाट साला ॥ *(पन्ना ८३२)*

श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बाणी संसार रूपी भवसागर से पार उतरने के लिए मानो जहाज़ है। गुरु जिस मनुष्य पर पल भर के लिए ही कृपा की दृष्टि करता है वह मनुष्य गुरु के नाम रूपी शबद को हृदय में विचारता है और अपने अंदर से क्रोध को निकालकर मुक्ति पा लेता है :

तारण तरण खिन मात्र जा कउ द्रिस्टि धारै सबदु रिद बीचारै कामु क्रोधु खोवै जीउ ॥
(पन्ना १३९८)

धन्यवाद और प्रार्थना क्रोध को शांत करते हैं। बार-बार परमात्मा के भय में रहना, उसे याद रखना क्रोध को शांत ही नहीं करता बल्कि खत्म ही कर देता है। श्री गुरु अमरदास जी उच्चारण करते हैं कि जो मनुष्य अपने अंदर से क्रोध दूर कर लेता है वह पवित्र हृदय वाला बन जाता है। वह मनुष्य गुरु के शबद की बरकत से अपना जीवन संवार लेता है :

सो सूचा जि करोधु निवारे ॥
सबदे बूझै आपु सवारे ॥ *(पन्ना १०५९)*



कविता

श्री गुरु अरजन देव जी

सबक जमाने को पढ़ा गए गुरु अरजन देव।
नेक राह पे चलना सिखा गए गुरु अरजन देव।
जहां में खुद के लिए हर बशर ही जीता है,
जीना सबके लिए सिखा गए गुरु अरजन देव।
शहादत उनकी सिक्ख पंथ की पहली शहादत है,
धर्म बचाने का राह बता गए गुरु अरजन देव।
सूरज-चांद की रोशनी-सा था जीवन उनका,
अंधेरी राहों को रोशन बना गए गुरु अरजन देव।
ज़रा भी करते जो जुम्बिश तो जाने क्या होता,
अडोल रहकर ज़ालिमों को डरा गए गुरु अरजन देव।
थी जिसकी नींव रखी प्रथम पातशाही ने,
उस इंकलाब का मतलब बता गए गुरु अरजन देव।
गुरु ग्रंथ साहिब उन्हीं के सबब से मिला हमको,
मशाल गुरबाणी की सदा जला गए गुरु अरजन देव।
'फ़लक' उन्हीं की ही रहमत हुई है हम सब पर,
तमाम दुनिया को भक्ति सिखा गए गुरु अरजन देव।

-बीबी जसप्रीत कौर 'फ़लक', ११, सेक्टर १अ, गुरु ज्ञान विहार, डुगरी, लुधियाना-१४१००१

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का परम श्रद्धालु : राय कल्हा रायकोट

*-स. सिमरजीत सिंघ**

ज़िला लुधियाना के एक क्षेत्र को प्राचीन समय में तिहाड़ा के नाम से जाना जाता था। महाभारत में इस क्षेत्र का ज़िक्र विराट नगरी के रूप में भी आया है। इस क्षेत्र का नाम तिहाड़ा मुगल काल के समय सामने आया है। यहां एक तरफ सतलुज का बेट किनारा, दूसरी तरफ पूरब की ओर पुआध का क्षेत्र तथा तीसरी तरफ दक्षिण-पश्चिम की ओर मालवा क्षेत्र है। इन तीन क्षेत्रों से घिरा होने के कारण इस क्षेत्र को तिहाड़ा कहा जाता है। १९४७ ई से पहले यह इलाका सघन बसता क्षेत्र था जो बड़ी व्यापारक मंडी भी था। उसके बाद यह जगह उजड़ गयी तथा अपनी पहले वाली शानो-शौकत गंवा बैठी। आजकल तिहाड़ा मंड नामक एक गांव ही रह गया है जो लुधियाना में जगराउं तहसील में जगराउं से सिधवां बेट को जाने वाली सड़क पर २२ किलोमीटर तथा धरमकोट से १४ किलोमीटर दूर है। इस गांव में बादशाह अकबर द्वारा बनवाया हुआ एक मकबरा भी है। तिहाड़ के क्षेत्र में राय अहमद ने सन् १६४८ ई में रायकोट नामक कसबा आबाद किया था। आजकल रायकोट कसबा ज़िला लुधियाना में तहसील रायकोट का सदरमुकाम है।

रायकिआं (राय खानदान) की खानदानी पृष्ठभूमि पर नज़रसानी करते हुए मालूम होता है कि राय के मंज राजपूत थे। इनका पूर्वज़ राय मोकल भटनेर (जैसलमेर) से आकर १२वीं शती के मध्य में मालवा की फरीदकोट वाली जगह पर आबाद हो गया था। राय मोकल से चौथी पीढ़ी में राय तुलसी राम हुआ। राय तुलसी राम ने शाह ग्नासुदीन गौरी के समय मुसलमान धर्म धारण किया था। मुसलमान बना तुलसी राम इतिहास के पन्नों में शेख़ चक्कू के नाम से प्रसिद्ध हुआ। शेख़ चक्कू के पुत्र गोपाल ने लुधियाना ज़िले में शाहजहांपुर गांव आबाद किया था। शेख़ चक्कू के ख़ानदान में तीन राय कल्हा नाम के रईस (अमीरज़ादे) हुए। पहला राय कल्हा दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन का समकालीन था। दूसरा राय कल्हा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का समकालीन था और तीसरा राय कल्हा शुरू की सिक्ख मिसलों का समकालीन था। राय कल्हा (पहला) के घर दो पुत्रों--राय मनसूर व राय दाऊद ने जन्म लिया। राय कल्हा की मृत्यु के बाद राय मनसूर उसकी जागीर का मालिक बना। राय मनसूर के घर दो पुत्र-- राय मुहम्मद तथा राय कुतुब पैदा हुए। राय मनसूर की मृत्यु के बाद राय मुहम्मद जागीर का वारिस बना। राय मुहम्मद के घर राय अली, राय अली के घर राय अलिआस तथा राय अलिआस के घर राय अहमद का जन्म हुआ जो अपने-अपने समय में जागीर के मालिक बने। राय अहमद ने रायकोट कसबा आबाद किया। पहले रायकिआं की राजधानी तलवंडी थी। राय अहमद के समय इन्होंने अपनी हकूमत का केंद्र रायकोट को बना लिया था। राय अहमद के घर तीन

**उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; फोन : ९८१४८-९८२२३*

पुत्रों-- राय कमालुद्दीन, राय शाह मुहम्मद तथा राय शाहबाज़ ख़ान का जन्म हुआ। राय अहमद की मृत्यु के बाद राय कमालुद्दीन जागीर का वारिस बना। राय कमालुद्दीन ने १६४८ ई में जगराउं नगर बसाया था। यह शहर रौशनी के मेले के कारण पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यह मेला हर वर्ष १३ फाल्गुन को मोहकमुद्दीन की खानगाह पर लगता है। कहा जाता है कि शाहजहान के घर कोई संतान नहीं थी। उसने फकीर मोहकमुद्दीन के पास विनती की। इसके फलस्वरूप शाहजहान ने खानगाह बनवाई तथा पुत्र की प्राप्ति पर खानगाह पर घी के दीए जलाकर रौशनी की। उस समय से ही रौशनी का मेला प्रत्येक वर्ष लगता आ रहा है। राय कमालुद्दीन के घर दो पुत्रों-- राय शेर ख़ान तथा राय सलीम ख़ान का जन्म हुआ। राय कमालुद्दीन की मृत्यु के बाद राय शेर ख़ान जागीर का मालिक बना। राय शेर ख़ान के घर राय कल्हा (दूसरा) का जन्म हुआ जो राय शेर ख़ान की मृत्यु के बाद जागीर का वारिस बना। राय कल्हा के घर राय मुहम्मद का जन्म हुआ। राय मुहम्मद के घर तीन पुत्रों-- राय अहमद ख़ान, राय फ़तहि ख़ान तथा राय शाहबाज़ ख़ान का जन्म हुआ। राय कल्हा तथा उसके पुत्र-पोतों की श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में अथाह श्रद्धा थी।

दशम पातशाह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पौष के महीने के अत्यंत सर्दी के दिनों में संवत् १७६१ बिक्रमी को मुगल फौजों की कुरान की कसमों तथा हिंदू पहाड़ी राजाओं की गाय की कसमों पर एतबार कर श्री अनंदपुर साहिब का किला खाली कर दिया। गुरु जी का काफिला बाढ़ के उफ़ान के कारण तेज गति से बह रही सरसा नदी के किनारे पर पहुंचा था कि कहिलूर की पहाड़ी फौजों तथा वज़ीर ख़ान की मुगल फौजों ने अपनी सारी कसमें भुलाकर हमला कर दिया। अन्य फौज, जेहादी तथा लूटमार करने वाले श्री अनंदपुर साहिब नगर को लूटने चल पड़े। सरसा नदी के किनारे एक ऊंचे टिब्बे पर शाही फौज से लड़ाई शुरू हुई। गुरु जी का सारा काफिला बिखर गया। भाई मनी सिंघ जी, माता साहिब कौर जी, माता सुंदरी जी, भाई जवाहर सिंघ जी, भाई धंना सिंघ जी, जो दिल्ली के रहने वाले थे, सरसा पार कर हरिद्वार होते हुए दिल्ली पहुंच गए। माता गुजरी जी, छोटे साहिबज़ादों-- बाबा ज़ोरावर सिंघ जी तथा बाबा फ़तहि सिंघ जी गंगू रसोइए के घर गांव खेड़ी (सहेड़ी) पहुंच गए। गुरु साहिब बड़े साहिबज़ादों-- बाबा अजीत सिंघ जी तथा बाबा जुझार सिंघ जी एवं थोड़े-से सिंघों सहित रोपड़ की ओर निकल गए। जब गुरु जी रोपड़ के पास पहुंचे तो रोपड़ के पठानों ने रास्ता रोक लिया। दोनों तरफ से तेगें चलनी शुरू हो गईं। काफी जानी नुकसान हुआ। गुरु जी रोपड़ से होते हुए कोटला निहंग ख़ान पहुंच गए। निहंग ख़ान ने गुरु जी की बहुत सेवा की। गुरु जी ने उसको निशानी के रूप में कुछ शस्त्रों की बख़्शिश की। भाई बचित्तर सिंघ जी, जो जख़्मी हालत में थे, के इलाज की जिम्मेदारी गुरु जी भाई निहंग खां को सौंपकर आगे की तरफ चल पड़े।

गुरु जी साहिबज़ादों तथा सिंघों सहित गांव बूर माजरा, बाहमण माजरा से होते हुए चमकौर साहिब पहुंच गए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ज़ालिमों की बेशुमार फौजों का मुकाबला करने के लिए चमकौर साहिब में एक कच्ची गढ़ी को मोर्चा बनाया। मुट्ठी भर शूरवीर योद्धाओं का बहुत विशाल सेना के साथ युद्ध हो

रहा था। थके-मांदे व भूखे सिंघ ज़ालिमों के टिड्डी दल के साथ बेमिसाल टक्कर लेकर, शहीदी जाम पीकर सदा के लिए अकाल पुरख की गोद में विराज रहे थे। साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी, जिनकी आयु १७ वर्ष थी, ने तैयार-बर-तैयार होकर युद्ध के मैदान में जाने के लिए आज्ञा ली। गुरु जी ने साहिबज़ादा बाबा अजीत सिंघ जी के साथ भाई आलम सिंघ को भी भेजा। भाई आलम सिंघ ऐसी बहुत-सी जंगों का नायक था। जब बाबा अजीत सिंघ जी शहीद हो गए तो बाबा जुझार सिंघ जी ने अपने बड़े भाई की तरह रण-क्षेत्र में जाने की आज्ञा मांगी। वे भी अपने बड़े भाई की तरह वैरियों के दल को चीरते हुए शहीदी जाम पी गए। इस जंग में पांच प्यारों में से तीन प्यारे भाई मोहकम सिंघ जी, भाई साहिब सिंघ जी व भाई हिम्मत सिंघ जी रण-क्षेत्र में जूझे। एक-एक करके सारे सिदकी सिंघ अपनी तेग के जौहर दिखाते हुए दुश्मनों का दिल दहला कर शहीदी जाम पीते जा रहे थे। रात होने पर लड़ाई बंद हो गई। इस समय गढ़ी में गुरु जी सहित कुछेक सिंघ ही शेष रह गए थे जो आधी रात को गुरु जी के पास बैठे थे। उन्होंने विचार करके भाई दया सिंघ जी की अगुआई में पांच प्यारे चुन लिए तथा इन प्यारों ने गुरु जी को गढ़ी छोड़कर जाने का आदेश दे दिया, क्योंकि सिंघ महसूस कर रहे थे कि यदि गुरु जी शहीद हो गए तो पंथ का वारिस नहीं रहेगा और सिक्खों को ऐसा गुरु मिलना मुश्किल है। गुरु जी ने थोड़ी सोच-विचार के बाद इस आदेश को प्रवान कर लिया और अपने अस्त्र, शस्त्र तथा वस्त्र उतारकर बाबा संगत सिंघ जी, जिनका चेहरा गुरु जी से मिलता-जुलता था, को पहना दिए। अपनी कलगी उतारकर उनके सिर पर सजा दी। यह सब कुछ वैरियों को असमंजस में डालने के लिए किया गया। फिर यह फैसला हुआ कि तीन सिंघ-- भाई दया सिंघ जी, भाई धरम सिंघ जी तथा भाई मान सिंघ जी गुरु साहिब के साथ जाएंगे तथा अन्य सिंघ बाबा संगत सिंघ जी के साथ यहां ही रहेंगे। रात के अंधेरे में गुरु साहिब तथा तीनों सिंघ एक-एक करके गढ़ी में से निकलकर अलग-अलग रास्ते पड़ गए।

गुरु जी चमकौर साहिब से निकलकर जंडसर, कीड़ी, बहिलोलपुर, झाड़ साहिब आदि गांवों से गुज़रते हुए माछीवाड़ा साहिब पहुंच गए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी यहां गुलाबे, पंजाबे के कुएं पर आ गए। उन्होंने कुएं की मिट्टी की टिंड से कुएं में से पानी निकालकर पिया और टिंड का तकिया लगाकर आराम किया। इस जगह पर आजकल गुरुद्वारा चरण कंवल साहिब सुशोभित है। यहां ही गुरु जी ने शबद उच्चारण किया था :

मित्र पिआरे नूं हालु मुरीदां दा कहणा ॥
तुध बिनु रोगु रजाईआं दा ओढण नाग निवासां दे रहणा ॥
सूल सुराही खंजरु पियाला बिंग कसाईयां दा सहणा ॥
यारड़े दा सानूं सत्थरु चंगा भट्ठ खेड़िआं दा रहणा ॥

यहां ही गुरु जी को भाई धरम सिंघ जी, भाई दया सिंघ जी तथा भाई मान सिंघ जी आ मिले। बाग के माली ने बाग के मालिक गुलाब चंद को जाकर बताया कि बाग में कोई अजनबी राहगीर आकर रुके हैं। गुलाब चंद अपने भाई पंजाब चंद के साथ बाग में आ गया। माछीवाड़ा साहिब की निवासी एक बुजुर्ग माता हरिदेई गुरु जी की परम श्रद्धालु थी। उसने अपने हाथों से

कातकर तथा बुनकर तैयार किए वस्त्र गुरु जी को दिए। भाई गनी खां, भाई नबी खां और सिक्खों ने ये वस्त्र रंगरेज़ से नीले रंग में रंगवाकर गुरु जी को पहना उच्च के पीर का भेस बना लिया और गुरु जी को एक पलंग पर बैठा कर पालकी की तरह कंधों पर उठा लिया। गुरु जी माछीवाड़ा साहिब से घुलाल, लल्ल कलां, कटाणा साहिब, कनेच, साहनेवाल, नंदपुर, टिब्बा से होते हुए आलमगीर जा पहुंचे। यहां पर इनको भाई निगाहीआ सिंघ मिला, जो अपने पुत्र के साथ घोड़े बेचने जा रहा था। रास्ते में गुरु जी के दर्शन कर गुरु जी को एक घोड़ा सवारी के लिए पेश किया, जिस पर गुरु जी बहुत खुश हुए तथा चारपाई छोड़कर घोड़े पर सवार हो गए। यहां से गुरु जी हेरां, सीलोआणी गांव से होते हुए रायकोट पहुंचे।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी रायकोट नगर से बाहर एक झिड़ी में रात काटने के लिए ठहर गए। एक तालाब के किनारे शीशम (टाहली) के वृक्ष तले गुरु जी विराजे थे। आजकल यहां गुरुद्वारा टाहलीआणा साहिब सुशोभित है। गुरु जी के ठहरने वाले स्थान पर पहले थड़ा साहिब बना हुआ था। २०वीं शती के शुरू में यहां गुरुद्वारा साहिब की इमारत तामीर करवाई गई। बाद में इस इमारत का और विस्तार होता गया। इस स्थान का प्रबंध शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा किया जा रहा है।

पंजाब गवर्नमेंट के रिकार्ड के अनुसार राय कल्हा का पोता राय शाहबाज़ खां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को रायकोट से तीन मील की दूरी पर गांव बस्सीआं में मिला था, जहां वह अपने छोटे भाई फ़तहि ख़ान सहित रहता था। गुरु जी से इसका मिलाप उस समय हुआ जब वह गांव से बाहर शिकार के लिए जा रहा था। गुरु साहिब टाहलीआणा साहिब से दीने गांव की ओर जा रहे थे। इसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का बहुत आदर-सम्मान किया। रायकोट के नवाब राय कल्हा ने गुरु जी की बहुत सेवा की। नवाब मलेरकोटला तथा फूल खानदान के सरदारों के साथ रायकिआं के अच्छे संबंध थे तथा सूबा सरहिंद के साथ इनकी शुरू से ही अनबन थी। गुरु जी यहां लगभग दो सप्ताह तक रहे। रायकिआं ने अपना नूरा नामक आदमी सरहिंद भेजकर माता गुजरी जी तथा छोटे साहिबज़ादों के बारे में ख़बर मंगवाई। सिक्ख इतिहास में ज़िक्र आता है कि जब राय ने साहिबज़ादों तथा माता गुजरी जी की शहीदी की ख़बर सुनाई तो गुरु जी ने तीर की नोंक से कांस के पौधे को जड़ से उखाड़ दिया और कहा कि तुर्कानी हकूमत की जड़ें इसी तरह उखाड़ी जाएंगी। इस सम्बंध में ज्ञानी गिआन सिंघ 'तवारीख गुरू खालसा' में लिखते हैं कि :

"दूसरे दिन हलकारे ने आकर सारी खबरें दीं तो मालूम हुआ कि खेड़ी वाला गंगा राम ब्राह्मण गुरु-घर का रसोइया पहले तो माता जी को साहिबज़ादों सहित अपने घर ले गया। फिर खुद ही सामान छिपाकर चोर-चोर चिल्लाने लगा। जब माता जी ने कहा कि चोर तो कोई नहीं आया तो वो दुष्ट मोरिंडा वाले रंघड़ों को बुला लाया। माता जी को साहिबज़ादों सहित पकड़कर ले गए। सरहिंद वाले बजीद खां (वज़ीर खां) नाज़िम ने साहिबज़ादों को दीन में लाने के लिए बहुत भयभीत किया और लालच भी दिए परंतु उन्होंने एक न मानी। अपना धर्म न छोड़ा, देह छोड़ दी (शहीदी प्राप्त कर ली)। . . . दुष्ट बजीद खां (वज़ीर ख़ान) पत्थर-दिल ने पहले उन गुलाब के फूलों जैसे मासूम बच्चों को दीवार में चिनवाया। जब वो

दीवार फट गई तो कत्ल करवा दिया। परंतु शाबाश उन बच्चों की, जिन्होंने धर्म न छोड़ा, तन छोड़ दिया! . . .

. . . सारी बात सुनकर गुरु जी ने वचन किया, मलेरियों ने हाअ का नारा लगाकर अपनी जड़ रख ली। . . . यह तुर्कों की जड़ उखड़ गई। इतना कहकर उसने कांस के पौधे को उखाड़ फेंका . . . सुनकर राय कल्हे ने गुरु जी के चरण पकड़ लिए कि मेरा क्या गुनाह है? मुझे उन पापियों के साथ न मिलाओ। उसकी विनती सुनकर गुरु साहिब ने अपनी गातरे की कृपाण उतारकर उसको बख़्शी तथा वचन किया, आपकी जड़ की रखवाली यह तेग रहेगी। . . . सुनकर राय कल्हे को बहुत खुशी तथा रंज दोनों प्राप्त हो गए।"

भाई संतोख सिंघ 'श्री गुर प्रताप सूरज' ग्रंथ में इस घटना का ज़िक्र करते हैं :

दोहरा :

सुन स्राप गुर ते जबै, बिसमयो कल्लाराय।
मैं संगी तुरकान को, तिनहुं संग जढ़ जाइ।

चौपई :

रहयो समीप नहीं कर जोरे।
नहिं बखशायहु गुरू निहोरे।
अबि भी समो लेउं बखशाइ।
इम निशचै मन महिं ठहिराय।
उठयो सभा ते जुग कर मोरे।
श्री प्रभु क्रिपा करहु मम ओरे।
दास कदीमी रावर केरा।
तुरकनि सन किछ हितु नहिं मेरा।
तिन के साथ न मोहि मिलाओ।
अपन श्राप ते प्रथक बचाओ।
श्री गुर कहैं प्रथम के समै।
अपने हेत कहिन थो हमै।
देति श्राप ते प्रथक बनाइ।
सुनति राय कल्ले तबि कहयो।
इतो कोप मैं नाहिन लहयो।
अबि भी शरन परे की राखहु।
दास जानि बखशन अभिलाखहु।
मेरो राज तेज रखि लीजै।
परयो शरन अबि करुना कीजै। . . .
जोरावारी करति है राय।
जड़ अपनी राखन के दाइ।
असतरन के तर तरवार।
तहिं ते श्री प्रभु लई निकारि।
निज कर महिं धरि बाक बखाना।
तुझ को बखशहिं चारु क्रिपाना।
जबि लगि रखहु अदब इस केरा।
रहै बंस हुइ राज बडेरा।
नहिं पूजहु सनमानहु नांही।
किधों पाइ ले को गर मांही।
बंस राज तिस दिन ते छीन।
कछु नहिं रहै साच लिहु चीन।

गुरु जी ने रवाना होते समय रायकिआं को अपनी गातरे की कृपाण के अतिरिक्त गंगा सागर तथा (पोथी रखकर पढ़ने वाली) रेहल भी निशानी के रूप में प्रदान की। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जो कृपाण रायकिआं को बख़्शिश की उसके फल पर दाहिनी तरफ गुरमुखी अक्षरों में गुरबाणी की इबारत लिखी हुई है :

अकाल पुरख की रछिआ हम नै ॥
ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
उतार खासे पातशाही १० ॥
सरब लोह की रछआ हम नै ॥

दूसरी तरफ लिखा है :

सरब काल की रछआ हम नै ॥
सर . . . जी दी रछआ हम नै ॥

भाई कान्ह सिंघ नाभा 'महान कोश' में

लिखते हैं कि इस कृपाण के फल पर Genon लिखा हुआ है। Genond इटली की प्रसिद्ध बंदरगाह है। यहां प्राचीन समय में बहुत उत्तम किस्म की कृपाणें बनती थीं। जब यूरोप के व्यापारी हिंदोस्तान आने लगे, तब यहां की कृपाणें भारत में आईं।

राय गुरु जी से बख़्शिशें प्राप्त करके बहुत खुश हुए तथा गुरु जी की कृपाण को गुरु जी की दात समझकर बहुत ही सत्कार सहित सेवा करते रहे। भाई संतोख सिंघ ने इस सम्बंध में बहुत भावपूर्ण ढंग से बयान किया है :

हरखयो राय सदन ले आयो।
सुंदर एक प्रयंक डसायो।
चारु बिछौना ऊपर छाए।
पूजन सौज लयाइ समुदाए।
अतर फूल की माल बिसाला।
चंदन अति सुंदर गंधाला।
धूप धुखाइ आरती कीनि।
चंदन चरचित सुमनसु लीनि।
तिस प्रयंक पर खड़ग टिकायो।
पूजहि शरधा भाव वधायो।
दीपक घ्रित पाइ नित जारे।
नित ही फूल माल को चारे।
खीन खाफ की तूल रजाई।
हिम रुति महिं असि ऊपर पाइ।
रहै अंगीठी आगै धरी।
फिरहि चौर सुंदर सभि घरी।
ग्रीखम रुत महिं पोशिश धरी।
पट बनारसी दुपटा ज़री।
घनी सुंगधि अतर ते आदि।
नित प्रति पूजहि करि अहिलाद।

राय मुहम्मद की मृत्यु के बाद राय अहमद जागीर का मालिक बना। इसकी राज-भाग में कोई रुचि नहीं थी, इसलिए इसने जागीर की सारी जिम्मेदारी अपने छोटे भाई शाहबाज़ ख़ान को सौंप दी थी। राय शाहबाज़ ख़ान के जीते-जी गुरु जी की इन पावन निशानियों का बहुत आदर-सम्मान किया जाता रहा। राय अहमद ख़ान बहुत लंबी आयु भोगकर परलोक सिधार गया। राय शाहबाज़ ख़ान के दो पुत्र-- राय कमालुद्दीन तथा राय कुतुबुद्दीन थे। राय कमालुद्दीन का पुत्र था-- राय कल्हा (तीसरा)। इस तीसरे राय कल्हा ने मुसलमान हकूमत के कारण अपना असर-रसूख बहुत बढ़ा लिया था। इसने फिरोज़पुर से लुधियाना तक का बहुत सारा इलाका अपने कब्ज़े में कर लिया था। पटियाला के राजा आला सिंघ ने सरहिंद वाले अली मुहम्मद के साथ मिलकर राय कल्हा के खिलाफ़ साज़िशें घड़नी शुरू कर दीं। इस दौरान राय कल्हा के भाई राय मोहकम ख़ान की मृत्यु हो गई। राय कल्हा कुछ समय के लिए पाकपटन चला गया। राय कल्हा (तीसरा) का पुत्र था राय मुहम्मद ख़ान तथा राय मुहम्मद ख़ान का पुत्र था राय मुहम्मद अलिआस। राय मुहम्मद आलिआस का समय १७७९ ई से १८०२ ई तक का है। इस समय के दौरान गुरु साहिबान की बख़्शिशों की कद्र पहले जैसी न रही, जो राय कल्हा के समय से चली आ रही थी। इस सम्बंध में 'श्री गुर प्रताप सूरज' ग्रंथ में भाई संतोख सिंघ ज़िक्र करते हैं :

सो भी भोगि आरबला मरयो।
तिस प्रौत्रा गादी पर थिरयो।
संगति पाइ मुलाननि केरी।
बिगरयो शरधा घटी घनेरी।
मिलहिं तुरक गन तरक उचारहिं।
इह काफर की रीति बिचारहिं।
हिंदुनि गुर के सिख तुम रहे।
वहिर शर्हा ते पुशतनि लहे।

दोजक परहु अगारी जाइ।
कयामात महिं तुम लहो सज़ाइ।
नीको खड़ग गरे नहिं पावहु।
निस दिन धरे प्रयंक पुजावहु।
इत्तयादिक तिह बहु समझायो।
राय प्रीत ले गल में पायो।
तिन ही दिन चढयो अखेरा।
किम रहि सकहि काल जो प्रेरा।

मौलानों की बातों में आकर राय अलिआस ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा बख़्शी कृपाण अपने गातरे में धारण कर ली तथा घोड़े पर सवार होकर जगराउं की ओर निकल पड़े। उसने अपने घोड़े को एक हिरन के पीछे तेज रफ़तार से दौड़ाया। घोड़े को ठोकर लग जाने के कारण घोड़ा ज़मीन पर गिर गया तथा राय अलिहास का पांव रकाब में फंस गया। घोड़ा दोबारा खड़ा होकर दौड़ने लगा तो राय अलिआस ने अपना पांव रकाब में से निकालने के लिए घोड़े की चमड़े की रकाब को काटने के लिए गातरे में डाली कृपाण निकाल ली। इसी दौरान अफरा-तफरी में यह कृपाण राय की जांघ को ही चीर गई। जख़्म गहरा होने के कारण थोड़ी दूर जाकर राय अलिआस की सन् १८०२ ई. में मृत्यु हो गई। भाई संतोख सिंघ 'श्री गुर प्रताप सूरज' ग्रंथ में ज़िक्र करते हैं :

वहिर झील बड महिं जबि गयो।
निकसयो म्रिग अविलोकति भयो।
सकल सैन को थिर तहिं करि कै।
गयो इकांकी गरब सु धरि कै।
भयो नेर तरवार निकारी।
झुकि झटपट म्रिग ऊपर झारी।
सो बचि गयो छाल करि आगी।
इम शमशेर साफ हुइ बहि।
कटयो उरू कुछ बाकी रही।
तर गिर परयो तुरंग ढिग खरयो।
सभि सैना तबि टोरनि करयो।

राय अलिआस की कोई संतान नहीं थी। इसके बाद इसकी विधवा रानी भाग भरी ने राज-भाग संभाला। रानी भाग भरी रायकिआं के ख़ानदान में से ही राय शाहबाज़ ख़ान के भाई राय फ़तहि ख़ान के पड़पोते राय दौलत ख़ान की पुत्री थी। रानी भाग भरी ने अपने भतीजे राय इमाम बख़्श खां को मुतबन्ना (दत्तक पुत्र) बना लिया। राय इमाम बख़्श के साथ राय अहमद ख़ान, जो राय कल्हे के ख़ानदान से सम्बंध रखता था, रायकोट में ही रहता था। इस समय हिंदोस्तान में राजसी उथल-पुथल का माहौल बना हुआ था। राय अलिआस की मृत्यु के बाद अगले वर्ष १८०३ ई में ही अंग्रेजों ने दिल्ली पर कब्ज़ा कर लिया तथा हिठाड़ सतलुज की रियासतों को अपने राज्य में शामिल करने का कार्य आरंभ कर दिया था। दूसरी तरफ महाराजा रणजीत सिंघ सतलुज पार कर लुधियाना के काफी इलाके पर काबिज़ हो गये। १८०६ ई. तक लुधियाना सहित जगराउं के फिरोज़पुर के बहुत-से गांव महाराजा रणजीत सिंघ ने कब्ज़े में करके अपने समर्थकों-- राजा भाग सिंघ जींद, राजा जसवंत सिंघ नाभा, स. गुरदित्त सिंघ लाडवा तथा दीवान मोहकम चंद में बांट दिए थे तथा रानी भाग भरी को गुज़ारे के लिए तीन गांव दे दिए थे।

महाराजा रणजीत सिंघ के समय चौधरी कादिर बख़्श अहिलकार राजा कपूरथला के द्वारा रानी भाग भरी से श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की कृपाण, जो उन्होंने राय कल्हा को बख़्शी थी, मांगी तथा उसके बदले में जागीर देनी चाही, किंतु रानी भाग भरी ने यह कहकर इंकार कर

दिया कि हम गुरु साहिब की दी हुई पावन निशानियों को बेचने वाले नहीं हैं। बाद में पटियाला के राजा ने भी यह कृपाण प्राप्त करने की कोशिश की परंतु रानी ने इंकार कर दिया। मई, १८५४ ई में रानी भाग भरी की भी मृत्यु हो गयी। उसके बाद उसका मुतबंन्ना राय इमाम बख़्श जागीर का वारिस बना। गुरु जी की बख़्शी कृपाण के बारे में इमाम बख़्श तथा राय अहमद ख़ान ने पंजाब गवर्नमेंट को फारसी में लिखकर दिया कि :

"रोज़े कि ज़नाब माई साहिबा मुअज्ज़मा मकरमा रहलत फ़रमाए मुलिक जाविदां शुदंद व साहिब डिपटी कमीशनर बहादर ज़िला लुधियाणा बराय मअज़रत व तशफ्फी मा बेकसां व दरिआफत हालि रौनक अफ़रोज़ कसबा राय कोट सुदंद मा फिदवीआं बख़िआलि फहिमीदह शमशेर मुतब्बरका गुरू गोबिंद सिंघ रा कि बिहतर अज़ी कालाए बेबहा नज़रि शहनशाह इंगलशीआ बहादुर बज़रीयह जनाबि गवरनर जनरल साहिब बहादुर गुज़रानी-देम।"

नाभा के राजा स. जसवंत सिंघ ने मलेरकोटला वालों के जरिए गुरु जी की पावन कृपाण प्राप्त कर ली। उन्होंने नाभा के किले में पश्चिम दिशा वाले बुर्ज में गुरुद्वारा श्री सिरोपाओ साहिब बनाकर उसमें गुरु साहिब की अन्य पावन बख़्शिश निशानियों के साथ रायकिआं को गुरु जी द्वारा बख़्शी कृपाण भी संगत के दर्शन के लिए सुशोभित कर दी थी। इस सम्बंध में भाई कान्ह सिंघ नाभा 'महान कोश' में ज़िक्र करते हैं कि "यह कृपाण रायकिआं से नवाब मलेरकोटला के ज़रिए महाराजा जसवंत सिंघ नाभा को प्राप्त हुई, जिन्होंने इसको गुरुद्वारा सिरोपाओ साहिब नाभा में संभालकर रखा हुआ था।"

राय इमाम बख़्श ख़ान के घर तीन पुत्रों-- राय फैज तालब ख़ान, राय अमीर ख़ान तथा राय फ़तहि ख़ान का जन्म हुआ। राय तालब ख़ान के घर राय अनाइत ख़ान तथा राय फ़तहि ख़ान के घर दो पुत्रों-- राय बहावल ख़ान तथा राय मुहम्मद ज़फर ख़ान का जन्म हुआ।

सन् १९४७ ई में पाकिस्तान बनने के समय यह परिवार पाकिस्तान चला गया। अब राय अज़ीज़उल्ला ख़ान, सदस्य पार्लियामेंट, लाहौर के पास श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बख़्शिश गंगा सागर संभाला हुआ है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा रायकिआं को बख़्शी कृपाण नाभा ख़ानदान वाले अपने दिल्ली परवास के समय अन्य पावन निशानियों सहित दिल्ली ले गए थे। ये गुरु जी की पावन निशानियां अब पंजाब सरकार ने नाभा ख़ानदान वालों से लेकर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को सौंप दी हैं। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा ये विरासती निशानियां तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब में संगत के दर्शन हेतु सुशोभित कर दी गई हैं। ❁



खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥

*-स. निरवैर सिंघ अरशी**

श्री गुरु नानक देव जी द्वारा स्थापित सिक्ख धर्म, जिसके रूप को अन्य गुरु साहिबान ने संवारा व निखारा तथा श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इसे नया स्वरूप प्रदान किया, संसार का सर्वश्रेष्ठ, आधुनिक तथा वैज्ञानिक धर्म है। हमारे पास श्री गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में इलाही बाणी का पावन संग्रह मौजूद है, जिसकी शरण में आने से तथा जिसके दैवी उपदेश धारण करने से मनुष्य-मात्र के समस्त ताप, पाप व संताप मिट जाते हैं, कल-कलेशों का नाश तथा अज्ञानता के अंधकार का विनाश हो जाता है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब घोर अज्ञानता व अंधकार में उलझे हुए, वहमों-भ्रमों में भटक रहे तथा पापों-कुकर्मों की आग में झुलस रहे समस्त संसार को शांत करने एवं सही दिशा प्रदान करने के समर्थ है।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी का महान परोपकार है कि आप ने अपनी देख-रेख में श्री गुरु ग्रंथ साहिब तैयार करवाया तथा इस पावन ग्रंथ को श्री हरिमंदर साहिब में प्रकाशमान किया। सारे गुरु साहिबान ने अपने जीवन काल के दौरान बाणी के अदब-सत्कार को बरक़रार रखा। सप्तम पातशाह श्री गुरु हरिराय साहिब ने बाणी की एक पंक्ति बदलने के कारण अपने बड़े पुत्र राम राय के साथ संबंध-विच्छेद कर लिए थे और आदेश दिया था कि पावन गुरबाणी की अवज्ञा करने वाला हमारे सामने न आए। हम ऐसे इंसान की शकल भी नहीं देखना चाहते।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने नांदेड़ में श्री गुरु ग्रंथ साहिब को युगो-युग अटल गुरतागद्दी सौंप कर समूह सिक्ख पंथ को इसके लड़ लगाया। हमारा नाता हमेशा के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ कायम-दायम कर दिया गया, जिससे हमने किसी भी हालत में मुनकर या बेमुख नहीं होना। सिक्ख का धर्म है कि वो श्री गुरु ग्रंथ साहिब के बिना किसी अन्य को अपना गुरु न माने। सुहागिन वही होती है जिसकी ज़िंदगी हर सुख-दुख के समय अपने शौहर के साथ ही गुज़रे। इसके विपरीत जो इधर-उधर ताक रखे उसको सुहागिन कदाचित नहीं कहा जा सकता। श्री गुरु नानक साहिब के सिक्ख ने दुहागिन नहीं बल्कि सुहागिन बनकर अपना लोक-परलोक संवारना है। उसने गुरु-परायण होकर बेअंत पातशाह का ओट-आसरा लेना है, दोगला बनकर जगह-जगह पर ख्वार नहीं होना :

दाता ओहु न मंगीऐ फिरि मंगणि जाईऐ।
होछा साहु न कीचई फिरि पछोताईऐ।
साहिबु ओहु न सेवीऐ जम डंडु सहाईऐ।
हउमै रोगु न कटई ओहु वैदु न लाईऐ।
दुरमति मैलु न उतरै किउं तीरथि नाईऐ।
(वार २७:१५)

उपरोक्त पउड़ी में भाई गुरदास जी फरमान करते हैं कि वहां से नहीं मांगना चाहिए, जिससे फिर किसी अन्य के पास जाकर मांगने जाना पड़े। छोटे दिल वाले को शाह नहीं बनाना चाहिए, क्योंकि बाद में पछताना पड़ता है। उस

**बिल्डिंग यूको बैंक, नवीं आबादी, श्री अनंदपुर साहिब (ज़िला रोपड़)-१४०११८, फोन : ९८८८६३६४१३*

(मालिक) की सेवा न कीजिए जिस कारण बाद में यमदूतों से मार खानी पड़े। उस वैद्य से दवा न लें जिससे हउमै का रोग न काटा जाए। उस तीर्थ पर जाकर क्यों नहाएं जहां खोटी अक्ल की मैल निवृत्त न हो सके।

सुमेर पर्वत पर सिधों ने श्री गुरु नानक पातशाह जी से जब पूछा था कि आप हम तक किस शक्ति से आ पहुंचे हो-- *"कउणु सकति तुहि एथे लिआई।"* गुरु साहिब ने उत्तर दिया-- *"हउ जपिआ परमेसरो भाउ भगति संगि ताड़ी लाई।"* जब सिधों ने कोई करामात दिखाने के लिए मांग की तो गुरु जी ने कहा, *"गुरु संगति बाणी बिना दूजी ओट नही है राई।"* बड़े अफसोस की बात है कि हम एक अकाल पुरख तथा नाम-बाणी का आश्रय छोड़कर दंभी, पाखंडी व फरेबी लोगों की संगत में जाने को तरजीह देते हैं तथा इनके मटकते, चमकते चेहरे को देखने को ही अपनी मुक्ति समझते हैं। इस सब कूड़ व माया के खेल में उलझकर हम अपने अमूल्य मानवीय जीवन को व्यर्थ गंवा रहे हैं।

छठम पातशाह की यह साखी इतिहास में आम मिलती है। एक बार आप शिकार को गए तो रास्ते में भारी अजगर (सांप) तड़प रहा था। अनेकों कीड़े उसको नोच-नोचकर खा रहे थे। भाई जोध शाह तथा भाई बिधी चंद आदि सेवक गुरु जी के साथ थे। भाई जोध शाह ने सांप के ज़िंदा शरीर में कीड़े पड़ने का कारण पूछा तो गुरु जी ने फरमाया कि यह सांप पिछले जन्म में महंत बना हुआ था जो कि अपने सेवकों की पूजा-प्रतिष्ठा खाता था। यह खुद ही भटक रहा था, ऐसे में इसने किसी का क्या पार-उतारा करना था! जब इसकी मृत्यु हुई तो यह सांप की योनि में पड़ा और इसके पीछे लगे सेवक कीड़ों की। जैसे यह अपने सेवकों की कमाई खाता था, उसी तरह वे कीड़े बनकर इसको खाने तथा नोचने लगे :

स्री हरिगोबिंद सभिठि सो, अहि गाथ उचारी।
पूरब जनम महंत इह, बिदतयो जग भारी।
चहुंदिसि के नर मंनता, करि सीस निवावैं।
अनिक पदारथ आन करि, इस को अरपावै।
जिते किरम तन महि परे, सगरे तबि चेले।
होइ बडाई जगत बड, इस हित कर मेले।
अहंकार उर महिं बडो, मम सम नहि दूजा।
करहि देश सभ बंदना, चरननि की पूजा।
सिमरयो नहिं करता पुरख, शुभ करम न कीना।
गन चेलनि करिबो भजन, उपदेश न दीना।
हंकारति ही मर गयो, जूनी अहि पाई।
लोक परलोक सुख ते रखे, सो क्रिम समुदाई।
काटि काटि गन खाति है, नहिं इनहि उधारा।
पलटा पूरब जनम को, लेते इस बारा।
आप न उधरयो जगत ते, नहिं सिख उबारे।
निज मनता के हेत करि, शुभ काज विसारे।
(श्री गुर प्रताप सूरज)

पाखंडी खुद भी डूबते हैं और अपने साथ लगने वालों को भी डुबो देते हैं, कहीं का नहीं छोड़ते।

भाई गुरदास जी ऐसे लोगों के पीछे लगने वाले अज्ञानी पुरुषों के बारे में कहते हैं :

सतिगुर साहिबु छडि कै मनमुखु होइ बंदे दा बंदा।
हुकमी बंदा होइ कै नित उठि जाइ सलाम करंदा।
आठ पहर हथ जोड़ि कै होइ हजूरी खड़ा रहंदा।
नीद न भुख न सुख तिसु सूली चढ़िआ रहै डरंदा।
पाणी पाला धुप छाउ सिर उतै झलि दुख सहंदा।
आतसबाजी सारु वेखि रण विचि घाइलु होइ मरंदा।
गुर पूरे विणु जूनि भवंदा॥ (वार १५:४)

ऐसे ढोंगी मनुष्यों के बारे में दशम पातशाह फरमान करते हैं :

भेख दिखायो जगत को लोगन को बस कीन ॥
अंत काल काती कटे बास नरक मो लीन ॥

गुरबाणी में संत के लक्षण बड़े विस्तार सहित दिए हैं :

--जिना सासि गिरासि न विसरै हरि नामां मनि मंतु ॥
धंनु सि सेई नानका पूरनु सोई संतु ॥
(पन्ना ३१९)

--इह नीसाणी साध की जिसु भेटत तरीऐ ॥
(पन्ना ३२०)

-- . . .सुनि संतना की रीति ॥ . . .
चंदन अगर कपूर लेपन तिसु संगे नही प्रीति ॥
(पन्ना १०१८)

--संत रहत सुनहु मेरे भाई ॥
उआ की महिमा कथनु न जाई ॥१॥ रहाउ ॥
वरतणि जा कै केवल नाम ॥
अनद रूप कीरतनु बिस्राम ॥
मित्र सत्रु जा कै एक समानै ॥
प्रभ अपुने बिनु अवरु न जानै ॥२॥
कोटि कोटि अघ काटनहारा ॥
दुख दूरि करन जीअ के दातारा ॥
सूरबीर बचन के बली ॥
कउला बपुरी संती छली ॥३॥ (पन्ना ३९२)

"*कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥*" के अनुसार कोई विरला ही गुरमति की कसौटी पर पूरा उतरता है।

उत्तरी भारत के लगभग हर गांव में हमें ज्यादा नहीं तो कम से कम एकाध डेरा ज़रूर ऐसा मिलेगा जहां किसी न किसी तथाकथित संत-महात्मा ने अपना पाखंड-जाल बिखेरा हो। इन १०८ या १११ नंबरी 'ज्ञानियों' की तरह-तरह की कहानियां सुनने को मिल जाती हैं। हर कोई अपने आप को दूसरे से ज्यादा दर्शाता है। अल्प बुद्धि वाले लोग अपना सारा कार-व्यवहार छोड़ इनके पीछे लग जाते हैं तथा अपना तन-मन-धन और इससे भी ज्यादा कीमती 'समय' इनसे कुर्बान कर देते हैं।

ऐसे पीछे लगने वाले लोगों के मन में तथाकथित संतों के एजेंटों द्वारा ऐसी बात बैठा दी जाती है कि आपके बड़े भाग्य हैं, जो आप यहां आए हो। यह भी ज़ोर-शोर से कहा जाता है कि ये 'संत' तो जगत उधारने के लिए ही आए हैं। यदि ऐसे तथाकथित संत काम में अंधे होकर रास-लीला रचाने लग जाएं तो उनके सेवकों द्वारा उनके इस कुलक्षण को भी अंधी श्रद्धा-भावना से ही देखा जाता है कि ये भी 'संतों' के चोज हैं।

गुरु कैसा हो, इसके बारे में गुरबाणी में स्पष्ट फरमान है :

--सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥
तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥
(पन्ना २८६)

--जिसु मिलिऐ मनि होइ अनंदु सो सतिगुरु कहीऐ ॥
मन की दुबिधा बिनसि जाइ हरि परम पदु लहीऐ ॥ (पन्ना १६८)

--बंधन तोड़ि बोलावै रामु ॥
मन महि लागै साचु धिआनु ॥
मिटहि कलेस सुखी होइ रहीऐ ॥
ऐसा दाता सतिगुरु कहीऐ ॥ (पन्ना १८३)

--नानक सतिगुरु ऐसा जाणीऐ जो सभसै लए मिलाइ जीउ ॥ (पन्ना ७२)

--सभना का भतारु एकु है सुआमी कहणा किछू न जाइ ॥ (पन्ना ५५९)

--सभना का पिरु एकु है पिर बिनु खाली नाहि ॥ (पन्ना १०८८)

--इसु जग महि पुरखु एकु है होर सगली नारि

सबाई ॥ *(पन्ना ५९१)*

गुरु की ज़रूरत के बारे में श्री गुरु अरजन देव जी इस प्रकार फरमान करते हैं :

गुर मंत्र हीणस्ह जो प्राणी ध्रिगंत जनम भ्रसटणह ॥
कूकरह सूकरह गरधभह काकह सरपनह तुलि खलह ॥ *(पन्ना १३५६)*

अर्थात् जितने भी प्राणी गुरु-मंत्र से विहीन हैं, उनका जन्म धिक्कार योग्य है।

हर प्रकार के दुख-दर्द का निवारण करने वाले, कार्य संवारने वाले, वाहिगुरु का नाम जपाने वाले तथा भवजल पार उतारने वाले युगो-युग अटल सतिगुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब हैं। सिक्ख धर्म में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की शरण त्यागकर किसी पाखंडी देहधारी को गुरु का दर्जा देना प्रवान नहीं है। भाई गुरदास जी फरमान करते हैं :

सुखु सागरु गुरू छडि कै भवजल अंदरि भंभलभूसे।
लहरी नालि पछाड़ीअनि हउमै अगनी अंदरि लूसे।
जम दरि बधे मारीअनि जमदूतां दे धके धूसे।
(वार १५:१३)

कविताएं

अमृत वेला

दूर तक फैला है सागर, आसमां से मिल रहा।
बाल-रवि अरुणाभ शीतल, धीरे-धीरे खिल रहा।
चल रहे मदमस्त झोंके, तन तरंगित हो रहा।
ज़ोर है ताज़ी हवा का, उत्स मन में भर रहा।
पक्षियों का चहचहाना, प्रकृति का गीत है।
शांति में कोयल का कूजन, दिव्यतम संगीत है।
अमृत वेला इसे हैं कहते, मन में याद प्रभु की आए।
शुभ कर्म से शुरुआत होकर, दिन सारा संवर जाए।

करुणा आओ, अब तो आओ

करुणा आओ, अब तो आओ।
सबके अंतर में बस जाओ।
तुम बिन सब कुछ रूखा-रूखा।
प्रेम-सरोवर सूखा-सूखा।
आकर इसको सरस बनाओ।
नैना छलकें यूं भर जाओ।
बाण नयन के तीखे-तीखे।
अपनापन अब दुर्लभ दीखे।
भावुक सबका हृदय बनाओ।
सबको सबका मीत बनाओ।
जब हम आते, कुछ न लाते।
'मैं-मेरा' फिर क्यों चिल्लाते?
तुम हृदयों में 'पर' को बसाओ।
सबके सुख का सार सिखाओ।
तुम आओ तो दुख सब भागें।
प्रेम बढ़ेगा सुख सब जागें।
आओ, अब न देर लगाओ।
करुणा कण-कण में बस जाओ।

-श्री प्रशांत अग्रवाल, ४०, बजरिया मोतीलाल, बरेली-२४३००३ (उ. प्र.), मो : ९४११६०७६७२

शहीद-ए-आज़म सरदार भगत सिंह

*-डॉ राजेंद्र सिंह साहिल**

शहीद-ए-आज़म सरदार भगत सिंह का भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है। देश को ब्रिटिश हकूमत से मुक्ति दिलाने के लिए सरदार भगत सिंह ने एक प्रभावशाली सशस्त्र मुहिम चलाई और अंतत: हंसते-हंसते फांसी पर चढ़ कुर्बानी दी।

देश-भक्त परिवार से सम्बंध : सरदार भगत सिंह का जन्म २८ सितंबर, १९०७ ई को लायलपुर (अब पाकिस्तान में फैसलाबाद) के गांव बंगा में हुआ। इनके पिता का नाम स. किशन सिंह और माता का नाम बीबी विद्यावती था। यह परिवार देश-भक्तों का परिवार था। सरदार भगत सिंह के पिता स. किशन सिंह और दादा स. अरजन सिंह राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में अत्यंत सक्रिय भूमिका निभा रहे थे। सरदार भगत सिंह के चाचा स. अजीत सिंह 'पगड़ी संभाल जट्टा' लहर के प्रमुख नेताओं में से एक थे। इस प्रकार सरदार भगत सिंह को प्रारंभ से ही घर में राष्ट्र-प्रेम का माहौल मिला।

शिक्षा एवं क्रांतिकारियों से संपर्क : सरदार भगत सिंह का खानदानी गांव खटकड़कलां (ज़िला शहीद भगत सिंह नगर, पंजाब) है, परंतु इनका प्रारंभिक पालन-पोषण इनके जन्म-स्थान बंगा में ही हुआ। इन्होंने प्राइमरी शिक्षा बंगा के स्कूल में ही प्राप्त की। सन् १९१६ ई में इनका दाख़िला डी. ए. वी. स्कूल लाहौर में करा दिया गया। यहां इनका संपर्क सूफी अंबा प्रसाद, लाला लाजपत राय, लाला पिंडी दास और रास बिहारी बोस जैसे राष्ट्र-भक्त क्रांतिकारियों के साथ हुआ।

इन्हीं दिनों सरदार करतार सिंह सराभा की शहादत और १९१९ ई की वैसाखी वाले दिन घटित जलियां वाला बाग के हत्याकांड ने इनके भावुक हृदय को अत्यंत व्यथित कर दिया और इनके मन में अंग्रेजों के अत्याचारों के विरुद्ध गहरा आक्रोश भर गया।

असहयोग आंदोलन में भाग : पंजाब की धरती से उठी असहयोग लहर, जो कि बाद में असहयोग आंदोलन बन गई, में भी १४ वर्षीय दसवीं के छात्र सरदार भगत सिंह ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। इन्होंने डी. ए. वी. स्कूल छोड़कर नेशनल कॉलेज, लाहौर में दाख़िला ले लिया जो कि क्रांतिकारियों का गढ़ माना जाता था। यहां इनका संपर्क भगवती चरण वोहरा और सुखदेव के साथ हुआ।

क्रांतिकारियों से निकटता : एफ. ए. पास करने के बाद सरदार भगत सिंह लाहौर से कानपुर आ गये। कानपुर में इनकी भेंट बटुकेश्वर दत्त, चंद्रशेखर आज़ाद और राम प्रसाद बिस्मिल से हुई। सन् १९२४ में गणेश शंकर विद्यार्थी के कहने पर ये लाहौर वापिस आ गये और युवा साथियों को साथ लेकर 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना की।

साइमन कमीशन का विरोध : ३० अक्तूबर, १९२८ ई को जब साइमन कमीशन पंजाब आया तो लाहौर में इसका व्यापक विरोध हुआ। लोगों ने 'साइमन-गो बैक' के नारे लगाते हुए एक बड़ा जुलूस निकाला। सरदार भगत सिंह और उनके नौजवान साथी भी इस जुलूस में शामिल थे।

अंग्रेज सरकार की पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर ज़बरदस्त लाठीचार्ज किया, जिसमें लाला

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

लाजपत राय बुरी तरह से घायल हो गए और बाद में उनकी मृत्यु हो गई।

सांडर्स की हत्या : सरदार भगत सिंघ और उनके साथियों ने इस भयानक लाठीचार्ज का बदला लेने की ठानी। लाठीचार्ज का आर्डर अंग्रेज अफसर स्कॉट ने दिया था, मगर १९ दिसंबर, १९२८ ई को सरदार भगत सिंघ, राजगुरु और चंद्रशेखर आज़ाद ने गलती से स्कॉट की जगह एक अन्य पुलिस अफसर सांडर्स को मार डाला और वहां से फरार हो गये।

भेष बदलकर लाहौर से निकलना : सांडर्स की हत्या के बाद लाहौर को पूरी तरह सील कर दिया गया। सरदार भगत सिंघ दुर्गा भाभी और सुखदेव के साथ भेष बदलकर लाहौर से निकल गये। अंग्रेजों की पुलिस को इसकी भनक तक नहीं लगी।

लाहौर से निकलकर सरदार भगत सिंघ सीधे कलकत्ता पहुंचे। यहां इनका संपर्क बंगाल के क्रांतिकारियों से हुआ और अंग्रेज हकूमत के विरुद्ध नई-नई योजनाएं बनने लगीं।

असेंबली हॉल में बम विस्फोट : क्रांतिकारियों में विचार-विमर्श हुआ कि दिल्ली के असेंबली हॉल में एक बम विस्फोट किया जाये, जिससे कोई जानी नुकसान न हो, परंतु अंग्रेजों के दिल में हमारी धाक बैठ जाये और भारतीय जनता जाग उठे।

८ अप्रैल, १९२९ ई को सरदार भगत सिंघ और बटुकेश्वर दत्त ने असेंबली हॉल में बम धमाका किया। उस समय असेंबली में 'पब्लिक सेफ्टी बिल' पर बहस हो रही थी। सरदार भगत सिंघ और दत्त ने दो बम फेंके। हॉल में भगदड़ मच गई। सरदार भगत सिंघ और बटुकेश्वर दत्त खड़े होकर पर्चे फेंकते रहे और 'इंकलाब ज़िंदाबाद' के नारे लगाते रहे। दोनों भागे नहीं बल्कि खुशी-खुशी अपनी गिरफ्तारी दी।

सरदार भगत सिंघ और बटुकेश्वर दत्त पर दिल्ली में मुकद्दमा चलाया गया। इस मुकद्दमे के माध्यम से सरदार भगत सिंघ ने अपनी बात भारत और सारी दुनिया के सामने रखी। आखिरकार १२ जून, १९२९ ई को इन दोनों को उम्र कैद की सज़ा दे दी गई।

लाहौर जेल में भूख हड़ताल : सांडर्स-कत्ल केस के सिलसिले में सरदार भगत सिंघ, दत्त, राजगुरू, सुखदेव आदि क्रांतिकारियों को लाहौर जेल ले जाया गया। यहां अंग्रेज सरकार का राजनैतिक बंदियों के साथ व्यवहार बहुत बुरा था, इसलिए सरदार भगत सिंघ और उनके साथियों ने जेल में भूख हड़ताल कर दी।

सरकार ने भूख हड़ताल तोड़ने की बहुत कोशिश की, मगर नाकाम रही। भूख हड़ताल ६३ दिनों तक चली। इस दौरान एक क्रांतिकारी जतिन दास की मृत्यु हो गई। आखिरकार सरकार को सरदार भगत सिंघ और उनके साथियों की सभी मांगें माननी पड़ीं।

फांसी की सज़ा : सांडर्स-कत्ल केस में अक्तूबर, १९३० ई में सरदार भगत सिंघ, राजगुरू और सुखदेव को फांसी की सज़ा सुना दी गई। फांसी का दिन २४ मार्च, १९३१ ई मुकर्रर किया गया। देश में इसके खिलाफ़ उग्र विरोध प्रदर्शन शुरू हो गये। जनता के ज़बरदस्त विरोध से घबराकर अंग्रेजों ने नियत तिथि से एक दिन पहले ही २३ मार्च, १९३१ ई की शाम को सरदार भगत सिंघ, राजगुरू और सुखदेव को फांसी दे दी। इनके शव वारिसों को सौंपने के बजाय चोरी से हुसैनी वाला ले जाये गये और वहां सतलुज के किनारे आग लगाकर जला दिये। फिर अधजले शवों को सतलुज नदी में बहा दिया गया।

महान शहादत : सरदार भगत सिंघ मात्र २३ वर्ष के थे जब उन्हें शहीद किया गया। इस महान शहादत ने देश के युवाओं में अपूर्व जागृति पैदा कर दी। इसका भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर इतना गहरा असर पड़ा कि सिर्फ १६ वर्षों में ही अंग्रेजों को भारत छोड़कर भागना पड़ा।



गुरुद्वारा श्री कंध साहिब, बटाला

*-डॉ. रछपाल सिंघ**

गुरुद्वारा श्री कंध साहिब, बटाला, ज़िला गुरदासपुर की ऐतिहासिकता श्री गुरु नानक देव जी के विवाह पर्व से जुड़ी हुई है। श्री गुरु नानक देव जी का विवाह गांव पक्खोके रंधावा के निवासी श्री मूल चंद और माता चंदो रानी की बेटी माता सुलक्खणी जी के साथ बटाला में हुआ। जब गुरु जी की सगाई हुई, उस समय आप जी सुलतानपुर लोधी में नवाब दौलत खां के मोदीखाने की नौकरी करते थे। डॉ. साहिब सिंघ के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी की सगाई ५ वैसाख, संवत् १५४२ को हुई। उस समय गुरु जी की उम्र १६ साल थी। विवाह २४ ज्येष्ठ, संवत् १५४४ को हुआ। 'पुरातन जन्मसाखी', पृष्ठ ५७ के अनुसार, "जब श्री गुरु नानक देव जी के विवाह का दिन पक्का हुआ, तब गुरु जी के पिता श्री महिता कालू जी ने गांव के चौधरी श्री राय बुलार को भी निमंत्रण दिया।

श्री महिता कालू जी समाज में अच्छा मुकाम रखते थे। सरकारी कर्मचारी (पटवारी) होने के कारण उनका क्षेत्र के अच्छे-खासे रसूखदार लोगों के साथ संबंध था। इसलिए श्री गुरु नानक देव जी की बारात में जाने वालों की संख्या काफी थी। बारात पूरी शानो-शौकत के साथ बटाला पहुंची।

गुरु जी की बारात को जहां पर बैठाया गया, वहां पर एक कच्ची दीवार थी। जर्जर हालत में होने के कारण दीवार ढहने वाली थी। वधू पक्ष की एक बुजुर्ग स्त्री ने गुरु जी से कहा कि आप इस दीवार से दूर हटकर बैठना, यह गिरने वाली है। इस पर गुरु जी ने कहा कि "माता जी, इस दीवार की आप चिंता न करें, यह नहीं गिरेगी।" वो दीवार ज्यों की त्यों खड़ी रही।

समय पाकर इस पावन स्थान पर गुरुद्वारा श्री कंध साहिब सुशोभित हुआ। दीवार का कुछ हिस्सा उसी हालत में आज भी मौजूद है। उसे शीशे के फ्रेम में जड़ा हुआ है। गुरुद्वारा श्री कंध साहिब का प्रबंध शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा चलाया जा रहा है। बटाला शहर पंजाब के ज़िला गुरदासपुर की तहसील है। बटाला शहर श्री अमृतसर-जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग तथा रेल मार्ग पर श्री अमृतसर से ४० किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। कसबा ब्यास से ३० किलोमीटर तथा गुरदासपुर से ३५ किलोमीटर दूर है।

हर वर्ष गुरु जी के विवाह पर्व की याद में सालाना जोड़ मेल (उत्सव) संगत द्वारा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। एक विशाल नगर कीर्तन सुलतानपुर लोधी से गुरुद्वारा श्री कंध साहिब, बटाला तक आयोजित किया जाता है। इस नगर कीर्तन को आज भी 'गुरु जी की बारात' के नाम से जाना जाता है।

'पुरातन जन्मसाखी', पृष्ठ ६१ के अनुसार, गुरु जी की बारात बटाला में तीन दिन रही और चौथे दिन विदा हुई। 

**गांव : कैले कलां, डाक : घुम्मण कलां, ज़िला : गुरदासपुर-१४३५१८; फोन : ९८५५८५१०१४*

गुरबाणी चिंतनधारा : १०४

आसा की वार : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

सलोक म: १ ॥
पुरखां बिरखां तीरथां तटां मेघां खेतांह ॥
दीपां लोआं मंडलां खंडां वरभंडांह ॥
अंडज जेरज उतभुजां खाणी सेतजांह ॥
सो मिति जाणै नानका सरां मेरां जंताह ॥
नानक जंत उपाइ कै संमाले सभनाह ॥
जिनि करतै करणा कीआ चिंता भि करणी ताह ॥
सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥
तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥
नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥१॥
(पन्ना ४६७)

इस सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह ने परमेश्वर की अनंत रचना का ज़िक्र करते हुए यह स्पष्ट किया है कि परमेश्वर स्वयं ही जानता है कि उसने कितनी रचना की है। वह जीवों को उत्पन्न करता है और उनका पालन-पोषण करने वाला भी वही है। प्रभु के सच्चे नाम के बिना समस्त बाहरी उपक्रम व्यर्थ हैं।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जिस प्रभु ने मनुष्य, पेड़, तीर्थ, नदियां, मेघ (बादल), खेत (खलिहान), द्वीप, लोक, मंडल, खंड-ब्रह्मांड बनाए हैं, चार खाणियों (अंडज, जेरज, उतभुज तथा सेतज-- सृष्टि-उत्पत्ति के चार ढंग) से उत्पन्न अनंत जीवों, (इसके अतिरिक्त) सागरों एवं मेरू जैसे पर्वतों पर निवास करते समूह जीव-जंतुओं की गिनती-मिनती भी वही जानता है। सारी रचना अनंत संख्या में प्रभु ने आप ही उत्पन्न की है। अनंत जीवों को पैदा कर उनकी प्रतिपालना अर्थात् पालन-पोषण करने वाला भी स्वयं परमेश्वर ही है। परिपूर्ण परमेश्वर ने ही समस्त जीवों को बनाया है अर्थात् वाहिगुरु ने ही यह जगत-रचना की है और वही पालन-पोषण कर (हर दम) ख़्याल भी रखता है। जिसने यह संसार बनाया है मैं उसका ही गुणगान करता हूं, उसके कुर्बान जाता हूं। कल्याणकारी प्रभु का दरबार सदा स्थिर है अर्थात् सदैव कायम रहने वाला है। गुरु पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन उपदेश करते हैं कि ऐसे अटल, सदा स्थिर प्रभु के नाम-सिमरन के बिना तिलक, जनेऊ आदि बाहरी वेश सब व्यर्थ हैं।

उपरोक्त सलोक में परिपूर्ण परमात्मा की बेअंत रचना का वर्णन करते हुए परमेश्वर को ही सर्वेसर्वा बताया गया है। चार खाणियों-- जीव उत्पत्ति के चार तरीके, यथा-- अंडों से उत्पन्न होने वाले पक्षी आदि, जेरज-जेर से पैदा होने वाले-- मनुष्य, जानवर, उतभुज-- धरती से पैदा होने वाली-- वनस्पति, पेड़-पौधे आदि तथा सेतज-- पसीने से पैदा होने वाले-- जुएं आदि की प्रतिपालना भी परमात्मा ही कर रहा है। गुरबाणी में परमात्मा के सृजक एवं प्रतिपालक स्वरूप को बहुतायत में दर्शाया गया है :

सभना का मा पिउ आपि है आपे सार करेइ ॥
(पन्ना ६५३)

गुरबाणी हमें समस्त चिंताओं से मुक्त

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

रखकर चिंतन के लिए प्रेरित करती है। सबकी रचना करने वाले परमेश्वर को ही सबके रिज़क की चिंता है। यहां गुरबाणी की एक बहुत ही सुंदर उदाहरण उल्लेखनीय है कि परमेश्वर के हाथ में हुक्म रूपी नकेल है। परमात्मा जीव को जैसा हुक्म करता है उधर ही जीव को अपने 'दाने चुगने हेतु' जाना पड़ता है :

नकि नथ खसम हथ किरतु धके दे ॥
जहा दाणे तहां खाणे नानका सचु हे ॥

(पन्ना ६५३)

पारब्रह्म परमेश्वर की रचना अनंत, उसके कौतुक अनंत, उसकी ताकतें एवं रहमतें भी अनंत हैं। जीव को सब दुनियावी आसरे एवं चिंताएं छोड़कर केवल प्रभु का ही सिमरन करना चाहिए :

जल महि जंत उपाइअनु तिना भि रोजी देइ ॥
ओथै हटु न चलई ना को किरस करेइ ॥
नानक चिंता मति करहु चिंता तिस ही हेइ ॥

(पन्ना ९५५)

वास्तव में जल-थल, जहां कहीं भी प्रभु ने जीवों की उत्पत्ति की है, उनके आहार का प्रबंध भी समुचित रूप से किया है। इंसान ही है जो जीवन भर चिंता में घुलता रहता है, क्योंकि उसने स्वयं को कर्त्ता मानने की गुस्ताखी जो कर रखी है। इसी कारण से हमेशा चिंताग्रस्त रहता है। समस्त चिंताओं से मुक्त होने का सरल उपाय यही है कि हम उसका चिंतन करें जिसे हर पल हमारी चिंता है, परवाह है। यह चिंतन बाहरी क्रिया-कलापों, आडंबरों से नहीं अपितु हृदय की सच्ची भावना से संभव है।

म: १ ॥
लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु ॥
लख तप उपरि तीरथां सहज जोग बेबाण ॥
लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥
लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥
जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥
नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥

उपरोक्त सलोक में श्री गुरु नानक पातशाह ने जीव द्वारा चतुराई से किए गए अनेकों क्रिया-कलापों, पुण्य-कर्मों, कठिन साधनाओं का ज़िक्र करते हुए यही समझाया है कि प्रभु के सच्चे प्रतीक के बिना सब व्यर्थ है, लोकाचार है अर्थात् केवल आडंबर है। इन्हें त्यागकर परमेश्वर की रहमत के पात्र बनना ही हमारा जीवन-ध्येय है। श्री गुरु नानक देव जी पावन फरमान करते हैं कि बेशक लाखों ही भलाई के काम किए जाएं; लाखों ही ऐसे कार्य किए जाएं जो लोगों के द्वारा बताए गए हों और उन्हीं के द्वारा प्रवान किए गए हों; तीर्थ-स्थलों पर जा-जाकर लाखों ही तप साधे जाएं; (यही नहीं) जंगलों में जाकर समाधि लगाकर योग साधना की जाए; रण-भूमि में जाकर शूरवीरों वाले अनेक कौतुक किए जाएं जो बहादुरी से भरे हों (अर्थात् रण-भूमि में जाकर बेशक कोई सूरमा बनकर अनंत बहादुरी के कौतुक दिखाता रहे); मैदाने-जंग में दुश्मन का मुकाबला करते हुए प्राण त्यागे जाएं; लाखों ही तरीकों से ध्यान लगाया जाए तथा ज्ञान-चर्चा की जाए; मन को एकाग्र करके पुराण आदि धर्म-ग्रंथों का पठन किया जाए अर्थात् सुरति को टिकाकर एकाग्रचित्त होकर अनेक प्रकार की ज्ञान-चर्चा की जाए अथवा अनेक धर्म-ग्रंथों को पढ़ा जाए, फिर भी जिस परमेश्वर ने समूची सृष्टि की सृजना की है और जिस प्रभु ने समस्त जीवों का जीना-मरना निश्चित किया है, उसके सिमरन के

बिना, उसकी भक्ति के बिना सब अधूरे हैं। अंतिम पंक्ति में श्री गुरु नानक पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जीव की समस्त सियानपें, चालाकियां व्यर्थ हैं क्योंकि परमेश्वर की दरगाह में प्रवान होने हेतु परमेश्वर की रहमत ही सच्चा परवाना है अर्थात् दरगाह में परवानगी का निशान है।

परमेश्वर की दरगाह में प्रवान होने हेतु बाहरी समस्त आडंबर व्यर्थ हैं। मालिक के दर पर स्वीकार होने के लिए अकाल पुरख वाहिगुरु की रहमत ही सच्चा चिन्ह है। बाहरी किसी तरकीब, प्रयोजन अथवा विधि से परमेश्वर की रहमत का पात्र नहीं बना जा सकता। बेशक मनुष्य के पास बहुत ज्ञान है और इस ज्ञान के कारण वह ज्ञान-चर्चा में पारंगत प्रवीण हो, बहुत ही सूझवान अथवा चतुर हो, लेकिन गुरबाणी आशयानुसार परमेश्वर के हुक्म के सामने एक भी सियानप काम नहीं आती अर्थात् प्रवान नहीं। जपु जी साहिब में श्री गुरु नानक देव जी ने कलयुगी जीवों का इस संदर्भ में मार्गदर्शन किया है :

सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥
किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥
हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥
(पन्ना १)

गुरबाणी आशयानुसार न तो ये चतुराइयां जीव के साथ जाती हैं और न ही ऐसी सियानपों से परमेश्वर मिलता है। फिर जिज्ञासु-मन का प्रश्न उठाकर उसका सहज जवाब गुरु पातशाह जी ने दिया है कि किस प्रकार झूठ का पर्दा हट सकता है और अकाल पुरख का प्रकाश अंत:करण में कैसे हो। इसकी एक ही तरकीब गुरु पातशाह ने बतलाई है कि परमात्मा की रज़ा में हर हाल में राज़ी रहना चाहिए। परमात्मा की रज़ा में राज़ी रहना ही सचिआर होने का एक-मात्र साधन है। इस तथ्य को भक्त कबीर जी ने इस प्रकार समझाया है :

कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥
भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥ (पन्ना ३२४)

आसा की वार बाणी में हम इस भाव के दर्शन इस पावन पंक्ति में करते हैं :

हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥ (पन्ना ४७१)

जो प्रभु के हुक्म को गुरु-कृपा से समझ लेते हैं वे अपनी किसी प्राप्ति का गुमान नहीं करते। वे हर हाल में प्रभु की रज़ा में राज़ी रहना सीख लेते हैं। ऐसे जीव ही अपना जीवन सफल बनाने में कामयाब होते हैं।

पउड़ी ॥
सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥
जिसु तूं देहि तिसु मिलै सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥
सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ ॥
मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ ॥
विचि दुनीआ काहे आइआ ॥८॥

उपरोक्त पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी ने परमेश्वर के सदा स्थिर रहने वाले स्वरूप का ज़िक्र करते हुए यह समझाया है कि इस अटल सच्चाई को प्रभु ने स्वयं ही इस जगत में व्याप्त कर दिया है। यह तथ्य भी उजागर किया है कि यह गूढ़ रहस्य गुरु-कृपा से ही समझ में आ सकता है। मनमुख लोग अपना जीवन व्यर्थ ही गंवा लेते हैं।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि हे प्रभु! एक तू ही सच्चा साहिब है जिसने सर्वत्र सत्य ही सत्य व्याप्त किया है अर्थात् चारों दिशाओं में सत्य का प्रसार किया है। (और यह

भी हकीकत है कि) परमेश्वर जिसे सत्य जानने-पहचानने की समझ बख़्शता है उसे ही सत्य प्राप्त होता है। ऐसे व्यक्ति सत्य प्राप्त करके (पूर्णतया) सत्य आचरण करते हैं। जिन्हें सच्चा गुरु मिल जाता है उन्हें ही सत्यता की स्थिति प्राप्त होती है अर्थात् वे ही सदा स्थिर अडोल अवस्था के मालिक बनते हैं। सच्चा गुरु उनके हृदय-घर में सत्य को हमेशा के लिए बसा देता है, जिसके फलस्वरूप वे भी (परमेश्वर की तरह) अडोल अवस्था प्राप्त करने में सफल हो जाते हैं और अपना जीवन सफल बना लेते हैं। मूर्ख व्यक्ति इस सत्य की महिमा से अनभिज्ञ रहते हैं और मनमुखता के कारण अपना जीवन व्यर्थ गंवा लेते हैं। ऐसे व्यक्ति का जीवन गुरु पातशाह के चिंतनानुसार व्यर्थ है। आखिर उन्हें मनुष्य-जीवन प्राप्त करने का कोई भी लाभ नहीं होता।

इस पउड़ी में गुरमुख के जीवन की सार्थकता एवं मनमुख के जीवन की निरर्थकता का वर्णन स्पष्ट तौर पर किया गया है। गुरमुख अर्थात् गुरु की ओर मुख है जिनका, जिन्हें गुरु की हर बात प्यारी लगती है, वे ही गुरु-दर्शाये मार्ग पर चलकर अपना बेशकीमती जीवन सफल करने में समर्थ हो जाते हैं। इसके विपरीत मनमुख अर्थात् अपने मन की बात मानने वाले लोग होते हैं, जिन्होंने अपने मन के पीछे लगकर अपना कीमती जीवन बर्बाद किया होता है। विकारों में ग्रस्त हुए मनमुख व्यक्ति के लिए गुरबाणी में अनेक प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं ताकि जीव सचेत हो तथा अपने बेशकीमती जीवन को सफल बना सके। गुरबाणी-प्रमाण है :

मनमुख मनु तनु अंधु है तिस नउ ठउर न ठाउ ॥
बहु जोनी भउदा फिरै जिउ सुंञैं घरि काउ ॥
(पन्ना ३०)

अर्थात् मनमुख व्यक्ति मन-तन से अंधा है। उसको कहीं भी ठौर-ठिकाना नहीं मिलता। वह अनेक योनियों में भटकता फिरता है, जैसे कौआ निर्जन घरों में आता-जाता रहता है। मनमुख व्यक्ति लाभ का सौदा करना तो दूर अपना मूल भी गंवा लेता है :

मनमुख मूलु गवावहि लाभु मागहि लाहा लाभु किदू होई ॥
जमकालु सदा है सिर ऊपरि दूजै भाइ पति खोई ॥
(पन्ना ११३१)

इसके विपरीत गुरमुख प्यारों ने जीवन के मकसद को तथा अटल सत्य को पूर्णतया समझ लिया होता है और उसी रूप में अपना जीवन व्यतीत करते हुए अपना लोक-परलोक सार्थक बना लेते हैं, यथा :

कलि महि राम नामि वडिआई ॥
जुगि जुगि गुरमुखि एको जाता विणु नावै मुकति न पाई ॥१॥ रहाउ ॥
हिरदै नामु लखै जनु साचा गुरमुखि मंनि वसाई ॥
आपि तरे सगले कुल तारे जिनी राम नामि लिव लाई ॥ (पन्ना ११३१)

गुरमुख-जन प्रभु-नाम को हृदय में बसा कर अपने साथ-साथ अपनी कुल का भी उद्धार कर लेते हैं। 

ख़बरनामा

श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सत्कार एवं मर्यादा बहाल रखी जाए : जत्थेदार अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ७ अगस्त : जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने समूचे सिक्ख जगत की संगत से अपील की है कि वो श्री गुरु ग्रंथ साहिब की सेवा-संभाल, सत्कार तथा मर्यादा की बहाली हेतु सचेत होकर सेवा निभाए। कार्यालय से प्रेस ने नाम बयान जारी करते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि गुरुद्वारा साहिबान में शार्ट सर्किट की घटनाएं घटित होना बहुत ही गंभीर एवं चिंताजनक विषय है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने जहां समूह राजनीतिक तथा सामाजिक पार्टियों को श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सत्कार बहाल रखने हेतु अपील की वहीं समस्त धार्मिक सभा सोसायटियों, निहंग सिंघ जत्थेबंदियों, संतों-महापुरुषों, सेवा दलों तथा गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटियों से भी अपील करते हुए कहा कि वे अपने-अपने क्षेत्र में स्थित गुरु-घर तथा श्री गुरु ग्रंथ साहिब के अदब-सत्कार को कायम रखने के लिए विशेष ध्यान दें। उन्होंने कहा कि गुरुद्वारा साहिबान में बिजली की वायरिंग अच्छी किस्म की हो तथा उसमें लगने वाले बिजली के उपकरण-- पंखे, बल्ब, ट्यूब, लाइटें, स्विच, कूलर तथा ए.सी. आदि भी बढ़िया किस्म के लगाए जाएं तथा रात के समय ये सारे उपकरण बंद कर दिए जाएं।

कार्यकारिणी कमेटी की एकत्रता में लिए गए कई अहम फैसले

श्री फ़तहिगढ़ साहिब : १२ अगस्त : शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ की अध्यक्षता में कार्यकारिणी कमेटी की एकत्रता गुरुद्वारा श्री फ़तहिगढ़ साहिब के ज्ञानी गुरमुख सिंघ यादगारी एकत्रता घर में हुई, जिसमें गुरुद्वारा साहिबान के प्रबंध सम्बंधी कार्यों के निपटारे के अलावा अन्य बहुत-से महत्त्वपूर्ण फैसले भी लिए गए।

एकत्रता के बाद पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि कैलेफोर्निया के यूनियन सिटी में किसी अज्ञात व्यक्ति द्वारा सुखमनी साहिब बाणी का गुटका साहिब फाड़कर फेंके जाने पर दुख का इज़हार करते हुए इस कृत्य की निंदा की जाती है। उन्होंने कहा कि भारत की विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज से अपील की गई है कि जिस भी किसी ने यह शर्मनाक घटना की है, कैलेफोर्निया सरकार के साथ संपर्क स्थापित कर उस व्यक्ति को कानून के अनुसार सज़ा दी जाए। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी द्वारा जल्द ही एक ब्रोशर (विवरणिका) तैयार किया जाएगा, जिसमें सिक्खों की पहचान, मर्यादा एवं परंपराओं के बारे में जानकारी दी जाएगी। यह ब्रोशर विदेशी सरकारों एवं दूतघरों में भेजा जाएगा ताकि वहां के प्रशासनिक अधिकारियों को सिक्खों के बारे में सही जानकारी प्रदान करवाई जा सके। उन्होंने कहा कि जब भी कोई सिक्ख अमेरिका जाता है, यदि उसके पासपोर्ट पर पाकिस्तानी वीज़े की मुहर लगी हो, तो उसे अमेरिका इमीग्रेशन विभाग परेशान करता है तथा शक की नज़र से देखता है। उन्होंने कहा कि अमेरिका के राष्ट्रपति को पत्र लिखकर यह बताने का यत्न किया जाएगा कि दुनिया भर के सिक्ख अक्सर ही अपने ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान के दर्शन करने के लिए पाकिस्तान जाते रहते हैं, इसलिए अमेरिका के इमीग्रेशन

विभाग द्वारा सिक्खों को उनके पासपोर्ट पर पाकिस्तानी वीज़ा लगा होने के कारण परेशान न किया जाए।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि श्री अमृतसर के अटारी रेलवे स्टेशन, इंटरनेशनल एयरपोर्ट, नई दिल्ली, चंडीगढ़ एवं श्री अमृतसर के अलावा अन्य सारे राज्यों के डोमेस्टिक हवाई अड्डों पर वहां की सरकारों के साथ संपर्क स्थापित कर श्री हरिमंदर साहिब की तस्वीर लगाई जाएगी ताकि देश-विदेश से आने वाले यात्रियों को इस पावन स्थान के इतिहास से अवगत करवाया जा सके। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में गुरुद्वारा साहिबान के दर्शन को जाने वाली संगत की श्रद्धा-भावना को ध्यान में रखते हुए पाकिस्तान सरकार तथा पाकिस्तानी दूतावास के साथ संपर्क स्थापित करके अधिक से अधिक वीज़ा जारी करने के लिए अपील की जाएगी। उन्होंने कहा कि भारत के विभिन्न राज्यों के शहरों में जितने भी गुरुद्वारा साहिबान हैं वहां सुशोभित श्री गुरु ग्रंथ साहिब के पावन स्वरूप की रजिस्ट्रेशन एवं उनकी सेवा-संभाल संबंधी डाटा एकत्र किया जाएगा। उन्होंने कहा कि दिवंगत स. शिव सिंघ खुशीपुर तथा जत्थेदार अमरजीत सिंघ (भाटिया), भूतपूर्व सदस्य, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की तस्वीर केंद्रीय सिक्ख संग्रहालय में लगाने की स्वीकृति दी गई है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने बताया कि धार्मिक स्थानों की यात्रा करके वापिस लौट रहे ११ सिक्ख यात्रियों को पीलीभीत (उ. प्र.) में झूठे पुलिस मुकाबले में मार देने के कारण उनके परिवारों को एक-एक लाख रुपए की वित्तीय मदद दी जाएगी। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रबंध वाले 'ए' श्रेणी के गुरुद्वारा साहिबान में वर्षा के पानी को संरक्षित करने के लिए वाटर सेव ट्रीटमेंट प्लांट लगाए जाएंगे।

इस एकत्रता में स. रघुजीत सिंघ वरिष्ठ उपाध्यक्ष, स. केवल सिंघ बादल कनिष्ठ उपाध्यक्ष, स. सुखदेव सिंघ भौर महासचिव के अलावा कार्यकारिणी सदस्यगण तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रशासनिक अधिकारीगण उपस्थित रहे।

गुरुद्वारा बाबे दी बेर को पीरों की कब्र बताना गलत

श्री अमृतसर : २५ जुलाई : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने पाकिस्तान के सिआलकोट में स्थित गुरुद्वारा बाबे दी बेर को पीरों की कब्र बताने तथा ज़बरदस्ती अंदर दाख़िल होने की सख़्त शब्दों में निंदा की है। उन्होंने कहा कि यह गुरुद्वारा साहिब सिक्खों के प्रथम गुरु श्री गुरु नानक देव जी से संबंधित ऐतिहासिक स्थान है, जहां पर कुछ स्थानीय लोगों द्वारा कब्रें/मज़ार बनाकर नाज़ायज़ कब्ज़ा करने की कोशिश की जा रही है।

जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि गुरुद्वारा साहिबान की जायदाद पर नाजायज़ कब्जे रोकने के लिए औकाफ बोर्ड को हरकत में आना चाहिए तथा पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी को इन पावन स्थानों की सुरक्षा के लिए प्रयत्न करना चाहिए। उन्होंने कहा कि औकाफ बोर्ड को गुरुद्वारा साहिब के ग्रंथी सिंघ भाई जसकरन सिंघ की गुरुद्वारा साहिब का प्रबंध चलाने में मदद करनी चाहिए तथा शरारती तत्वों के खिलाफ़ सख़्त कार्यवाही करनी चाहिए। उन्होंने गुरुद्वारा बाबे दी बेर की दीवारों पर बने दीवार-चित्रों पर लिखी गुरबाणी की पंक्तियों को छुपाकर उन पर कलमा लिखने को निदंनीय करार दिया। उन्होंने औकाफ बोर्ड के चेयरमैन जनाब सिद्दीक-उल-फारूक से अपील करते हुए कहा कि पाकि स्थित गुरुधामों की सुरक्षा को विश्वसनीय बनाते हुए ऐसी समस्याओं का समय रहते हल किया जाए।

